Think IAS

दृष्टि The Vision

Think Drishti

हिन्दी साहित्य

श्रेष्ठ वैकल्पिक विषय

(रोचक, सुरक्षित, अंकदायी, भरोसेमंद तथा छोटा विषय)

(ऑडियो-वीडियो क्लासेज़)

- वैकल्पिक विषय का क्या महत्त्व है?
- वैकल्पिक विषय कैसे चुनें?
- हिन्दी साहित्य क्यों श्रेष्ठ विषय है?
- हिन्दी साहित्य का पाठ्यक्रम क्या है?
- हिन्दी साहित्य की तैयारी कैसे करें?

और ऐसे ही कई अन्य प्रश्नों का समाधान.....

Tashkent Marg, Patrika Chauraha, Civil Lines, Prayagraj
Contacts: 8448485518, 8750187501, 8929439702
Website : www.drishtiias.com

Think IAS

दृष्टि The Vision

Think Drishti

हिन्दी साहित्य

2017 में सर्वश्रेष्ठ परिणाम

1. गंगा सिंह (रैंक 33)- 315
2. वाव्यवा चौबे (रैंक 521)- 313
3. आरती सिंह (रैंक 118)- 310
4. प्रीति हुडा (रैंक 288)- 305
5. प्रमोद कु. यादव (रैंक 625)- 305
6. दीपक कुमार (रैंक 783)- 300
7. प्रदीप कुमार (रैंक 936)- 298
8. अंकित खण्डेलवाल (रैंक 41)- 294
9. कंचन कु. काण्डवाल (रैंक 263)- 293
10. प्रह्लाद सहाय मीणा (रैंक 951)- 291

..... व अन्य कई और

2018 में भी सर्वश्रेष्ठ परिणाम

इस वर्ष के परिणाम से पुन: सिद्ध हुआ है कि अंक प्राप्ति के मामले में हिन्दी साहित्य किसी भी अन्य विषय से बेहतर है। दृष्टि के कई विद्यार्थियों ने 290 से अधिक अंक हासिल किये हैं जिनमें से कुछ तो सिर्फ वीडियो क्लासेज़ के विद्यार्थी रहे हैं, जैसे-

(रैंक 161) 313 अंक
अरविन्द प्रताप सिंह

(रैंक 594) 307 अंक
चेतन कुमार मीना

(रैंक 694) 301 अंक
बिक्रम गंगवार

(रैंक 817) 296 अंक
आशीष कुमार

(रैंक 600) 293 अंक
हेमेन्द्र कुमार मीना

(रैंक 767) 291 अंक
रतनदीप गुप्ता

(रैंक 766) 289 अंक
दीप्ति देव यादव

(रैंक 573) 286 अंक
अनिल कुमार यादव

(रैंक 491) 284 अंक
प्रदीप कुमार द्विवेदी

(रैंक 615) 284 अंक
अक्षय तेम्रवाल

... व अन्य कई और- अनुपम जाखड़ (रैंक 739), विकास सुनदा (रैंक 584), कमलेश मीना (रैंक 977), सोनल (रैंक 451).....

Visit: www.drishtiIAS.com

विषय-सूची

1. वैकल्पिक विषय: अर्थ और महत्त्व 3
2. वैकल्पिक विषय का चयन कैसे करें? 3-4
   (i) विषय-चयन में सावधानी बरतना ज़रूरी है।
   (ii) विषय-चयन के तर्क व उनका परीक्षण
   (iii) विषय-चयन का वास्तविक आधार
3. हिंदी साहित्य: श्रेष्ठ विकल्प के तौर पर 5-6
4. अफवाहों तथा संदेहों का निराकरण 6
5. क्या आपके लिये हिंदी साहित्य लेना ठीक होगा? 7
6. हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम 7-8
7. पाठ्यक्रम का विश्लेषण 8-9
   (i) प्रश्नपत्र-I
   (ii) प्रश्नपत्र-II
   (iii) दोनों प्रश्नपत्रों का आपसी संबंध
   (iv) क्या चयनात्मक अध्ययन सम्भव है?
8. हिंदी साहित्य का कक्षा कार्यक्रम 10
   (i) अध्यापक
   (ii) अध्यापन प्रणाली
   (iii) पाठ्य-सामग्री
   (iv) जाँच-परीक्षाएँ तथा उत्तर-लेखन अभ्यास
9. पिछले वर्षों की परीक्षाओं में विभिन्न टॉपिक्स से प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति 10-13
10. कक्षाओं से पहले क्या पढ़ें? 13
11. संदर्भ-ग्रंथ/पुस्तक सूची 14
12. टॉपर्स क्या कहते हैं? 15-16

वैकल्पिक विषय: अर्थ और महत्त्व *(Optional Subject: Meaning and Importance)*

मुख्य परीक्षा में प्रत्येक उम्मीदवार को संघ लोक सेवा आयोग द्वारा निर्धारित सूची में से किसी एक विषय का चयन करना होता है। इसे ही वैकल्पिक विषय कहा जाता है। विषय के चयन में इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि उम्मीदवार की पृष्ठभूमि किन विषयों की रही है? उम्मीदवार जो चाहे, वही विषय चुन सकता है। उदाहरण के लिये, कोई इंजीनियर चाहे तो 'हिंदी साहित्य' चुन सकता है और कोई डॉक्टर चाहे तो 'इतिहास' विषय के साथ भी परीक्षा में शामिल हो सकता है। 2013 की परीक्षा के लिये जारी अधिसूचना में संघ लोक सेवा आयोग ने साहित्य के विषयों को चुनने का अधिकार सिर्फ उन उम्मीदवारों के लिये सीमित कर दिया था जिन्होंने स्नातक स्तर पर वह विषय पढ़ा है। किंतु, लोक सभा में हुए विरोध के बाद प्रधानमंत्री कार्यालय के राज्यमंत्री ने इस पर माफी मांगी तथा सभी उम्मीदवारों को अधिकार दिया कि वे वैकल्पिक विषयों की सूची में से अपनी रुचि के अनुसार कोई भी विषय चुन सकते हैं। इसके बाद संघ लोक सेवा आयोग ने एक नई और स्थायी अधिसूचना जारी की जिसमें स्पष्ट किया गया कि किसी भी वैकल्पिक विषय को चुनने पर कोई रोक नहीं है।

किसी भी वैकल्पिक विषय का पाठ्यक्रम दो प्रश्नपत्रों में विभाजित होता है। 2012 तक ये दोनों प्रश्नपत्र 300-300 अंकों के होते थे क्योंकि प्रत्येक वैकल्पिक विषय के लिये कुल 600 अंक निर्धारित थे। 2013 से लागू नई परीक्षा प्रणाली के अंतर्गत दोनों प्रश्न-पत्र 250-250 अंकों के रह गए हैं क्योंकि वैकल्पिक विषय के लिये अब कुल 500 अंक निर्धारित हैं। दोनों प्रश्न-पत्रों की परीक्षाएँ एक ही दिन बारी-बारी से आयोजित की जाती हैं। उम्मीदवार को प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिये 3 घंटे का समय दिया जाता है। वह अंग्रेज़ी या संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किसी भी भाषा में, जिसे उसने मुख्य परीक्षा के माध्यम के तौर पर चुना हो, प्रश्नों के उत्तर लिख सकता है। सिर्फ साहित्य के विषयों में यह चयन सीमित होता है और उम्मीदवार को प्राय: उसी लिपि में लिखना होता है जो उस भाषा की है, जैसे हिंदी साहित्य के लिये देवनागरी लिपि।

वैकल्पिक विषय का चयन कैसे करें? *(How to Choose the Optional Subject?)*

विषय-चयन में सावधानी बरतना ज़रूरी है *(It is necessary to be careful while choosing the optional subject)*

सिविल सेवा परीक्षा में उम्मीदवार की सफलता या विफलता तय करने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण कारक यही होता है कि उसने वैकल्पिक विषय का चयन कितनी सावधानी और परिपक्वता के साथ किया है? गौरतलब है कि परीक्षा प्रणाली के नए प्रारूप ने वैकल्पिक विषय का कुल योगदान भले ही 1200 अंकों से घटाकर 500 अंकों का कर दिया हो, पर वास्तविकता यह है कि सफलता प्राप्ति के नज़रिये से उसका महत्त्व कम नहीं हुआ है; और हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये तो वह और ज़्यादा हो गया है। इस बात को ठीक से समझने के लिये परीक्षा-प्रणाली को गहराई से समझना होगा।

इस परीक्षा की प्रकृति समझने वाले सभी व्यक्ति जानते हैं कि सामान्य अध्ययन में हिंदी माध्यम के उम्मीदवार अंग्रेज़ी माध्यम की तुलना में नुकसान की स्थिति में रहते हैं। इस नुकसान के कई कारण हैं, जैसे-

1. पहला कारण यह है कि अंग्रेज़ी में जिस स्तर की पाठ्य-सामग्री मिलती है, ठीक वैसी हिंदी में नहीं मिल पाती। यह समस्या उन खंडों में ज़्यादा विकराल है जिनमें रोज़-रोज़ नई घटनाएँ घटती रहती हैं और वे हिंदी अखबारों में या तो आती नहीं, और आती भी हैं तो बहुत कामचलाऊ ढंग से। ऐसे खंडों में विज्ञान-तकनीक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे तथा अर्थव्यवस्था प्रमुख हैं। गौरतलब है कि इन खंडों के लिये किताबें, पत्रिकाएँ और 'जर्नल' ही नहीं, इंटरनेट पर भी हिंदी में बराबर स्तर की पाठ्य-सामग्री नहीं मिल पाती।
2. दूसरा कारण यह है कि बहुत से परीक्षक अंग्रेज़ी में सहज होने के कारण हिंदी के उम्मीदवारों की अभिव्यक्ति से पूरा तादात्म्य नहीं बैठा पाते। वे हिंदी समझते तो हैं, पर हिंदी में की गई प्रभावपूर्ण अभिव्यक्तियों का मर्म ग्रहण नहीं कर पाते। यह समस्या उन खंडों में सघन रूप में दिखती है जिनमें पारिभाषिक शब्दावली का ज़्यादा प्रयोग होता है (जैसे–भूगोल, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण व विज्ञान-तकनीक) और ऐसे शब्दों के हिंदी अनुवाद परीक्षकों के लिये दुर्बोध होते हैं।
3. कभी-कभी प्रश्नपत्र में अनुवाद की गलती से भी ऐसा नुकसान हो जाता है। ध्यान रखना चाहिये कि मूल प्रश्नपत्र अंग्रेज़ी में बनाया जाता है और हिंदी में उसका अनुवाद किया जाता है। अगर अनुवादक किसी तकनीकी शब्द का अनुवाद पुस्तकों में प्रचलित अनुवाद से अलग कर दे या किसी मुहावरेदार अभिव्यक्ति को सटीक रूप में न समझ पाने के कारण अर्थ का अनर्थ कर दे तो उसकी गलती की सज़ा हिंदी माध्यम के उम्मीदवारों को भुगतनी पड़ती है।

इन तीनों वजहों से पुराने पैटर्न (जो 2012 तक लागू था) में 600 अंकों के सामान्य अध्ययन में हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी औसतन 30-40 अंकों के नुकसान में रहते थे। इस तथ्य का परीक्षण आप किसी भी साल की परीक्षा में शामिल हुए अपने परिचितों द्वारा अर्जित अंकों की तुलना से कर सकते हैं। 2013 से लागू हुए नए पैटर्न में सामान्य अध्ययन का वजन 1000 अंकों का हो जाने से यह खतरा भी बढ़ा है कि कहीं इसी अनुपात में यह अंतराल बढ़कर 60-70 अंकों का न हो जाए। ऐसे में सवाल उठता है कि इसकी भरपाई कैसे की जाए क्योंकि ऐसे नुकसान को झेलते हुए सफल होना काफी मुश्किल है। इसके अलावा, यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इंटरव्यू में भी हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी कई बार नुकसान में रहते हैं।

ध्यान रखें कि सिविल सेवा में सफल होने वाले सभी अभ्यर्थियों के बीच कुल अंतराल लगभग 100 अंकों का ही होता है। इसका अर्थ है कि यदि ऊपर के कुछ टॉपर्स को छोड़ दें तो शेष सभी चयनित उम्मीदवारों के मध्य सबसे ऊपर तथा सबसे नीचे के रैंक पर चयनित उम्मीदवारों के कुल अंकों में 100 अंकों का ही अंतर होता है। ऐसे में अगर हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी 60-70 अंकों (इंटरव्यू को जोड़ लें तो और ज़्यादा) के नुकसान के साथ प्रतियोगिता में उतरेंगे तो प्रायः वे सफल नहीं होंगे, और अगर होंगे भी तो काफी पीछे के स्थानों पर। 2011, 2013 और 2014 के परिणाम इसका नमूना माने जा सकते हैं जिनमें पहले 100 स्थानों में से सिर्फ 1 या 2 ही हिंदी माध्यम से थे।

पुराने पैटर्न के अंतर्गत हिंदी माध्यम के प्रतिभावान उम्मीदवार इस नुकसान की भरपाई अपने वैकल्पिक विषयों के माध्यम से कर लेते थे। वे हिंदी माध्यम के अनुरूप सही विषय चुनकर, उनमें अच्छी तैयारी करके 350-400 की परिधि में अंक प्राप्त कर लेते थे जिससे सामान्य अध्ययन में हुए नुकसान की काफी हद तक भरपाई हो जाती थी। चूँकि तब दो विषय हुआ करते थे और उनके लिये कुल 1200 अंक निर्धारित थे, इसलिये इस नुकसान की भरपाई करना बहुत मुश्किल नहीं होता था; पर अब स्थिति ठीक उलटी है। सामान्य अध्ययन में हिंदी माध्यम को होने वाले नुकसान की संभावित मात्रा बढ़ गई है (लगभग 60-70 अंक) जबकि इस नुकसान की भरपाई के लिये उपलब्ध अवसर कम हो गए हैं क्योंकि अब एक ही विषय है और वह भी कुल 500 अंकों का ही है। इसका मतलब है कि अब हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के लिये एक ही वैकल्पिक विषय में इतने अंक अर्जित करना ज़रूरी हो गया है कि सामान्य अध्ययन (और साक्षात्कार) में हुए नुकसान की भरपाई की जा सके; और इसका एकमात्र रास्ता यह है कि वही वैकल्पिक विषय चुना जाए जो न केवल सुरक्षित हो बल्कि अधिक-से-अधिक अंक दिलाने की ताकत भी रखता हो।

विषय-चयन के तर्क व उनका परीक्षण *(Arguments for subject selection & their examination)*

विषय चयन को लेकर सभी विषयों के पक्ष में कुछ न कुछ तर्क दिये जा सकते हैं। कुछ प्रसिद्ध तर्क तथा उनका परीक्षण निम्नलिखित है-

1. कुछ विषयों, जैसे लोक प्रशासन, इतिहास, राजनीति विज्ञान और भूगोल के पक्ष में आमतौर पर दिया जाने वाला तर्क है कि वे **सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में मदद** करते हैं।
   वास्तव में यह तर्क आधा सही और आधा भ्रामक है। यह तर्क वहीं तक सही हो सकता है जहाँ तक वह विषय सफलता के रास्ते में रुकावट न बनता हो। मान लीजिये कि कोई विषय सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम में कुछ मदद करता हो किंतु वैकल्पिक विषय के तौर पर किसी दूसरे विषय की तुलना में 50-100 या उससे भी ज़्यादा अंकों का नुकसान कराता हो तो सीधी सी बात है कि उसे लेना फायदे की नहीं, नुकसान की बात है। उसकी तुलना में अगर कोई विषय सामान्य अध्ययन के पाठ्यक्रम से अलग हो पर 3 महीने की तैयारी से दूसरे विषयों की तुलना में 50-100 अंक ज़्यादा दिलवाता हो तो फायदा उसे लेने में ही है।
2. कुछ दूसरे विषयों के समर्थकों का तर्क है कि कोई विषय इसलिये लिया जाना चाहिये क्योंकि वह **आकार में छोटा** है। हिंदी साहित्य, दर्शनशास्त्र और समाजशास्त्र के पक्ष में प्रायः यह तर्क दिया जाता है। वस्तुतः यह तर्क भी अधूरा है। मान लीजिये कि आपने कोई

कुलदीप द्विवेदी (IPS/2015)

मैंने 'दृष्टि द विज़न' संस्थान की सहायता ली। इसमें विकास सर की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। हिन्दी साहित्य में पर्याप्त नोट्स व मार्गदर्शन के कारण वैकल्पिक विषय में बहुत कम समय खर्च करना पड़ा।

तथाकथित 'छोटा' विषय लिया और 2-3 महीनों में ही तैयार कर लिया पर उसमें दूसरे विषयों के औसत अंकों की तुलना में 40-50 अंक कम मिले तो निस्संदेह यह फायदे की नहीं, भारी नुकसान की स्थिति है। दरअसल, 1 महीना बचाने के लिये आपने 1 साल का नुकसान कर लिया है; और अगर हर प्रयास में उस विषय में खराब अंक मिलते रहे और उसके कारण अंतिम रूप से चयन नहीं हुआ तो आपने 1 महीना बचाने के लिये अपना 30-35 साल का शानदार भविष्य दाँव पर लगा दिया है।

3. कुछ लोग तर्क देते हैं कि वैकल्पिक विषय के चयन का आधार यह होना चाहिये कि **उम्मीदवार की उससे संबंधित पृष्ठभूमि है या नहीं?**

   ध्यान से देखें तो सिविल सेवा परीक्षा में यह तर्क भी लागू नहीं होता। अधिकांश मामलों में देखा जाता है कि वैकल्पिक विषयों में सर्वोच्च अंक ऐसे उम्मीदवारों को प्राप्त होते हैं जिनकी उस विषय में कोई पृष्ठभूमि नहीं थी। इसके विपरीत, बहुत से मामलों में ऐसा भी देखा जाता है कि किसी विषय से उच्च अध्ययन (जैसे स्नातकोत्तर या पी.एच.डी.) करने वाले उम्मीदवार उसी विषय में बहुत कम अंक प्राप्त कर पाते हैं। सार यह है कि पृष्ठभूमि होने या न होने से इस परीक्षा के परिणाम पर कोई खास अंतर नहीं पड़ता। विषय का चयन उसकी सफलता की दर के आधार पर होना चाहिये, न कि पृष्ठभूमि के आधार पर। सच यह है कि यदि कोई उम्मीदवार पूरी गम्भीरता तथा उचित दृष्टिकोण से सिविल सेवा परीक्षा के किसी विषय के पाठ्यक्रम को 3-6 महीने पढ़ लेता है तो उसके लिये पृष्ठभूमि का प्रश्न अर्थहीन हो जाता है।

4. एक लोक-प्रचलित तर्क यह भी है कि विषय के चयन का मुख्य आधार **'रुचि'** होना चाहिये अर्थात् उम्मीदवार को वही विषय चुनना चाहिये जिसे पढ़कर उसे आनंद मिलता हो।

   वस्तुत:, यह तर्क उस स्थिति में ठीक होता अगर सिविल सेवा परीक्षा में सभी विषयों के परिणाम में वस्तुनिष्ठता तथा समानता होती; किंतु दुर्भाग्यवश ऐसा है नहीं। अगर आप विभिन्न उम्मीदवारों के वैकल्पिक विषयों के अंकों की सारणी बनाएंगे तो खुद समझ जाएंगे कि कुछ विषय बहुत अच्छा परिणाम देते हैं जबकि कई विषय परिणाम बिगाड़ने के लिये कुख्यात हैं। हिंदी माध्यम में तो यह संकट और ज़्यादा है क्योंकि दो-चार विषयों को छोड़ दें तो अधिकांश में या तो हिंदी में पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं, या फिर उचित मूल्यांकन करने के लिये हिंदी समझने वाले परीक्षक/प्रोफेसर उपलब्ध नहीं हैं। इसलिये विषय का चयन केवल रुचि के आधार पर करना खतरनाक हो सकता है। 'रुचि' और 'सफलता' में यदि विरोध हो तो पहली प्राथमिकता 'सफलता' को ही दी जानी चाहिये क्योंकि आप एक अत्यंत कठिन प्रतिस्पर्द्धा में शामिल हो रहे हैं जिसमें आपके अंक ही सफलता को निर्धारित करेंगे और अगर एक भी रणनीतिक भूल हुई तो सफलता प्राप्त करना असम्भव हो जाएगा।

विषय-चयन का वास्तविक आधार
(The real basis of subject selection)

सच कहें तो विषय चयन का असली आधार एक ही है; और वह यह कि वह **विषय आपकी सफलता में कैसी भूमिका निभाता** है? बाकी सभी आधार इसके सामने गौण हैं। वे इस आधार के साथ-साथ तो चल सकते हैं किंतु इसकी कीमत पर नहीं। इसका अर्थ है कि अगर सफलता की दृष्टि से दो विषय पूरी तरह बराबरी पर हों तो उनमें से उस विषय को प्राथमिकता दी जानी चाहिये जिसमें उम्मीदवार की पृष्ठभूमि अथवा/और रुचि हो; किंतु अगर एक विषय सफलता में सहायक हो और दूसरा बाधक हो तो बिना किसी संदेह के उसी विषय को प्राथमिकता देनी चाहिये जो सफलता में सहायक हो।

कोई विषय सफलता में कितना सहायक है, यह जाँचने के लिये देखना चाहिये कि वह परीक्षा में कितने अंक दिलाने की ताकत रखता है? उसमें अच्छे विद्यार्थियों को औसतन कितने अंक मिलते हैं? ध्यान दें कि अंकों का निर्धारण उसी माध्यम के उम्मीदवारों के आधार पर किया जाना चाहिये जिसमें आप परीक्षा देने वाले हैं। अगर अंग्रेज़ी माध्यम के किसी उम्मीदवार को किसी विषय में अच्छे अंक मिले हैं तो यह निष्कर्ष बिल्कुल न निकालें कि हिंदी माध्यम में भी वैसे ही अंक मिलेंगे। यह भी ध्यान रखें कि आपके वैकल्पिक विषय में अंकों का विचलन इतना ज़्यादा नहीं होना चाहिये कि एक बार आपको 350 अंक मिलें और दूसरी बार 200 से कम रह जाएँ। उसकी विषयवस्तु ऐसी नहीं होनी चाहिये कि हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी अंग्रेज़ी की तुलना में नुकसान झेलने को मजबूर रहें।

कुल मिलाकर, अगर किसी विषय में आपको हर वर्ष 10-20 ऐसे उम्मीदवार दिखाई देते हैं जिन्हें हिंदी माध्यम में (अगर आपका माध्यम अंग्रेज़ी है तो उसमें) 600 में से 300 (या 500 में से 250) से अधिक अंक प्राप्त हुए हैं तो आप मान सकते हैं कि वह विषय सफलता में सहायक है। यह भी ध्यान रखें कि उस विषय में सुरक्षा का स्तर अच्छा होना चाहिये। इसका अर्थ है कि अगर एक बार आपको 350 अंक मिले हैं तो यह विश्वास बनना चाहिये कि अगली बार भी लगभग उतने अंक मिल जाएंगे। ध्यान रखें कि कुछ विषयों (जैसे दर्शनशास्त्र, लोक प्रशासन तथा राजनीति विज्ञान) में कुछ उम्मीदवारों को अच्छे अंक मिले हैं लेकिन जिन उम्मीदवारों को एक बार 350 या अधिक अंक मिले, अगले वर्ष उन्हीं में से कइयों को 150-200 अंकों से संतोष करना पड़ा। सार यह है कि अगर आप सुरक्षित विषय चुनेंगे तो इस खतरे से बचे रहेंगे।

हिंदी साहित्य: श्रेष्ठ विकल्प के तौर पर
(Hindi Literature: As the Best Option)

उपरोक्त सभी आधारों पर विश्लेषण करें तो आप पाएंगे कि साहित्य के विषय इस दौड़ में सबसे आगे हैं। आप जिस भी भाषा में सहज हैं, आपको उसी का साहित्य (जैसे हिंदी, उर्दू, तमिल या संस्कृत साहित्य) चुन लेना चाहिये। हिंदी क्षेत्र के विद्यार्थियों के पास सबसे बेहतर विकल्प के तौर पर 'हिंदी साहित्य' है। इसके पक्ष में कुछ तर्क इस प्रकार हैं-

देवीलाल (IAS/2015)

मैंने हिन्दी साहित्य और निबंध के लिये 'दृष्टि द विज़न' संस्थान से कोचिंग ली जो मेरे लिये लाभदायक रही और सफलता में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

1. हिन्दी साहित्य की एक बार तैयारी कर लेने के बाद उसे प्रतिदिन या प्रतिवर्ष 'अपडेट' करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, अत: अभ्यर्थी किसी भी परीक्षा में अपने नोट्स को दोहराकर अच्छे अंक प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत, कई अन्य विषयों (जैसे लोक प्रशासन, समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान आदि) में पिछले एक वर्ष में घटी घटनाओं को अपडेट करना अभ्यर्थी के लिये ज़रूरी और कठिन होता है।
2. हिन्दी साहित्य एकमात्र विषय है जिसमें हिन्दी माध्यम के उम्मीदवारों की स्पर्द्धा अंग्रेज़ी माध्यम के उम्मीदवारों से नहीं होती। अन्य विषयों में अंग्रेज़ी माध्यम में अधिक पाठ्य-सामग्री उपलब्ध होने के कारण हिन्दी माध्यम के उम्मीदवार कुछ नुकसान की स्थिति में रहते हैं, जबकि हिन्दी साहित्य में नहीं।
3. चूँकि साहित्य के अध्ययन से जीवन के प्रति गहरा दृष्टिकोण विकसित होता है, इसलिये निबंध और साक्षात्कार में इसका अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। कुछ अच्छी काव्य-पंक्तियों का प्रयोग निबंध और साक्षात्कार में अनूठे अंक दिलवा सकता है। इसके अलावा, साहित्य पढ़ने से भाषा और उसकी समझ सुधरती है जो 'बोधगम्यता' (Comprehension) जैसी क्षमताओं के विकास में मदद करती है। ध्यान रखें कि प्रारम्भिक परीक्षा में सीसैट के प्रश्नपत्र में सफलता की दृष्टि से 'बोधगम्यता' की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
4. हिंदी साहित्य बहुत कम समय में ही तैयार हो जाता है। तीन महीने की अवधि में ही इसका संपूर्ण पाठ्यक्रम तैयार किया जा सकता है।
5. समझने की दृष्टि से हिन्दी साहित्य अत्यंत सरल विषय है क्योंकि इसमें जटिल अवधारणाएँ एकदम नहीं हैं। इस दृष्टि से यह दर्शनशास्त्र जैसे जटिल व अमूर्त विषयों से काफी बढ़त प्राप्त कर लेता है।
6. यह विषय संवेदनाओं, भावनाओं तथा विचारों से जुड़ा होने के कारण अत्यधिक रुचिकर, मर्मस्पर्शी तथा मनोरंजक है। उपन्यास, कहानियाँ और कविताएँ व्यक्ति की अपनी ही ज़िंदगी का प्रतिबिम्ब होती हैं। इसलिये साहित्य का अध्ययन करना एक अर्थ में अपने जीवन को ही गहराई में समझना है।
7. हिन्दी साहित्य में प्रश्नों के उत्तर बंधे बंधाए नहीं होते हैं, इसलिये अभ्यर्थी यदि अपनी ओर से कुछ लिखे तो उसे उसकी रचनात्मकता मानकर सम्मानित किया जाता है, दंडित नहीं। इसका लाभ यह होता है कि अगर उम्मीदवार को किसी प्रश्न का उत्तर न पता हो तो भी वह अपनी रचनात्मकता से उत्तर लिख सकता है। अन्य विषयों (जैसे गणित, दर्शनशास्त्र, लोक प्रशासन आदि) में ऐसे उत्तरों को पूरी तरह खारिज कर दिया जाता है जबकि साहित्य में ऐसे उत्तरों को भी सम्मान की नज़र से देखा जाता है। इस विशेषता का परिणाम यह होता है कि कोई भी प्रश्न छूटता नहीं और स्वाभाविक तौर पर उम्मीदवार को इसका व्यापक लाभ मिलता है।
8. राज्यस्तरीय परीक्षाओं में भी हिन्दी साहित्य अत्यधिक सफल विषय है। सभी राज्यों में हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों ने बार-बार सफलता का परचम लहराया है।

अफवाहों तथा संदेहों का निराकरण *(Elimination of Rumours & Doubts)*

कुछ लोग अपने निहित स्वार्थों के कारण भ्रम फैलाते हैं कि हिन्दी साहित्य में कई समस्याएँ हैं। ऐसी भ्रामक धारणाएँ तथा उनका निराकरण इस प्रकार है-

1. कुछ लोग कहते हैं कि हिन्दी साहित्य एक लंबा विषय है क्योंकि इसमें 22 रचनाएँ पढ़नी होती हैं। वस्तुत: यह सफेद झूठ है। सच यह है कि अधिकांश रचनाओं को सरसरी निगाह से देखना ही पर्याप्त होता है और कुछ रचनाएँ तो 5-10 पृष्ठों की ही हैं। असली बात यह है कि हिंदी साहित्य का संपूर्ण पाठ्यक्रम सिर्फ 80-90 दिनों में तैयार हो जाता है।
2. कुछ लोगों को भ्रम है कि हिन्दी साहित्य के लिये साहित्यिक या आलंकारिक भाषा तथा साहित्यिक पृष्ठभूमि का होना ज़रूरी है। सच यह है कि इसके लिये साधारण भाषा न केवल पर्याप्त है बल्कि वांछनीय भी है क्योंकि विद्यार्थी को साहित्य का विश्लेषण करना है, न कि साहित्य की रचना। यह केवल संयोग नहीं है कि हिंदी साहित्य से अच्छे अंक लाने वाले उम्मीदवारों में से अधिकांश वे हैं जिनकी हिंदी साहित्य की कोई पृष्ठभूमि नहीं रही है।
3. कुछ लोग नए उम्मीदवारों को यह कहकर बहकाते हैं कि अगर आप अच्छी कविताएँ नहीं लिख सकते तो आपके लिये हिंदी साहित्य मुश्किल होगा। यह एक बेहूदा तर्क है। सच यह है कि उम्मीदवार को सिर्फ साहित्य का विश्लेषण करना होता है, नया साहित्य लिखना नहीं होता। क्या इतिहास का विद्यार्थी होने के लिये ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई करना ज़रूरी है या उन खुदाइयों के परिणामों को जानना पर्याप्त है? क्या साइबेरिया का भूगोल पढ़ने के लिये साइबेरिया का भ्रमण करना ज़रूरी है? अगर नहीं, तो हिंदी साहित्य पढ़ने के लिये कवि होना क्यों ज़रूरी है?
4. कुछ लोगों को भ्रम है कि हिन्दी साहित्य में अंक लाने के लिये बहुत से उदाहरण रटने होते हैं। वस्तुत: इसके लिये पूरा उदाहरण नहीं, उसका आधा, चौथाई या उससे भी कम हिस्सा पर्याप्त होता है क्योंकि वह इस बात का प्रमाण मात्र है कि आपने रचना पढ़ी है। ऐसे प्रमाण हर विषय में अपेक्षित हैं, जैसे- भूगोल में नक्शे, इतिहास में पुरातात्विक या साहित्यिक साक्ष्य और राजनीति विज्ञान में संविधान के अनुच्छेद। इसके अलावा, हिंदी साहित्य में कई ऐसे उम्मीदवार रहे हैं जिन्होंने परीक्षा में एक भी उदाहरण नहीं लिखा और उसके बावजूद अच्छे अंक प्राप्त किये।
5. कुछ लोग यह भविष्यवाणी कर रहे हैं कि हिंदी साहित्य जल्दी ही संघ लोक सेवा आयोग की विषय सूची से हटने वाला है। यह भी कोरी अफवाह है। ध्यान रखें कि संघ लोक सेवा आयोग ने 2013 में पालि, जर्मन, रशियन आदि भाषाओं के साहित्य को वैकल्पिक विषयों की सूची से हटा दिया है पर 8वीं अनुसूची की भाषाओं तथा अंग्रेज़ी के साहित्य को बनाए रखा है। इस संबंध में प्रधानमंत्री

गंगा सिंह (IAS/2016)

मैंने 'दृष्टि द विज़न' संस्थान से हिंदी साहित्य के लिये कोचिंग ली। जो मेरे लिये काफी लाभदायक रहा और मेरी सफलता में इसकी अहम भूमिका रही।

कार्यालय के राज्यमंत्री ने लोक सभा में न सिर्फ स्पष्टीकरण दिया है बल्कि संघ लोक सेवा आयोग को चेतावनी भी दी है कि वह ऐसी चेष्टा दोबारा न करे।

क्या आपके लिये हिंदी साहित्य लेना ठीक होगा? *(Will it be right for you to opt Hindi Literature?)*

कोई भी वैकल्पिक विषय सभी उम्मीदवारों के लिये ठीक नहीं होता। अक्सर ऐसा होता है कि कई मेधावी उम्मीदवार गलत विषय चुन लेते हैं और उनके सभी या कई प्रयास इसी रणनीतिक भूल की वजह से बेकार हो जाते हैं। जब तक उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है, तब तक देर हो चुकी होती है। इसलिये, किसी भी गंभीर उम्मीदवार को विषय चुनने से पहले इस बात की जाँच कर लेनी चाहिये कि वह विषय उसकी क्षमताओं और रुचियों के अनुकूल है या नहीं? उदाहरण के लिये, अगर किसी उम्मीदवार को गूढ़ और जटिल अवधारणाएँ समझने में समस्या होती हो तो उसे 'दर्शनशास्त्र' जैसा अमूर्त विषय नहीं लेना चाहिये। इसी तरह, अगर किसी की अंग्रेज़ी कमज़ोर हो और वह 'द हिंदू' जैसे अखबार और अंग्रेज़ी की प्रसिद्ध पत्रिकाएँ और 'अकादमिक जर्नल' पढ़ने तथा उनमें लिखी बातों को हिंदी में प्रभावी तरीके से पेश करने में परेशानी महसूस करता हो तो उसे 'लोक-प्रशासन', 'अर्थशास्त्र', 'समाजशास्त्र' या 'राजनीति विज्ञान' जैसे विषयों से बचना चाहिये जिनमें समय-समय पर नई जानकारियों को जोड़ना ज़रूरी होता है।

हिंदी साहित्य भी हर किसी के अनुकूल नहीं है। इसे लेने के लिये पहली शर्त है कि हिंदी लिखने में उम्मीदवार ज़्यादा अशुद्धियाँ न करता हो। थोड़ी बहुत अशुद्धियाँ हों तो कोई बात नहीं, पर अगर हर पंक्ति में दो-तीन अशुद्धियाँ होती हों तो साहित्य के विषयों में नुकसान हो सकता है। दूसरी बात यह कि उम्मीदवार को साहित्य की रचनाओं (जैसे उपन्यास और कहानी) को पढ़ने में अरुचि नहीं होनी चाहिये।

हिंदी साहित्य लेने के लिये इन शर्तों के अलावा किसी और क्षमता की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिये, **अगर आपकी हिंदी साहित्य में पृष्ठभूमि नहीं है तो घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है।** सिर्फ तीन से चार महीने की गंभीर तैयारी से आप हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि रखने वाले विद्यार्थियों से बेहतर स्थिति में आ सकते हैं। यह बात इस तथ्य से भी प्रमाणित हो जाती है कि हिंदी साहित्य में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले उम्मीदवारों में बहुत से इंजीनियरिंग, विज्ञान, मेडिकल या प्रबंधन की पृष्ठभूमि से रहे हैं और उन्होंने सिर्फ 2-3 महीनों में ही इस विषय की तैयारी की है। ऐसे उदाहरणों में वर्ष (2012) के गौरव कुमार सिंह (आई.आई.टी. से इंजीनियर/हिंदी साहित्य में 334 अंक) तो हैं ही; कई अन्य सफल उम्मीदवार भी शामिल हैं, जैसे- (1) अजय कुमार-386 अंक (इंजीनियर/2010/आई.पी.एस.), (2) विवेक अग्रवाल-367 अंक (डॉक्टर/ 2011/आई.पी.एस.), (3) सूर्यप्रताप यादव-393 अंक (इंजीनियर/2010/आई.पी.एस.) तथा ऐसे ही कई अन्य।

अगर सिविल सेवा परीक्षा में आपका माध्यम अंग्रेज़ी है तो भी आप वैकल्पिक विषय के तौर पर हिंदी साहित्य ले सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको हिंदी साहित्य की परीक्षा हिंदी में देनी होगी जबकि शेष सारी परीक्षाएँ अंग्रेज़ी में। ऐसे बहुत से सफल उम्मीदवार रहे हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी माध्यम के साथ हिंदी साहित्य रखा और उसी की बदौलत सफलता प्राप्त की। वर्ष (2012) का परिणाम देखें तो 12वें, 28वें तथा 166वें रैंक पर चयनित उम्मीदवार इस वर्ग में शामिल हैं। इसके अलावा, अगर इससे पहले के वर्षों का परिणाम देखें तो धनंजय सिंह भदौरिया (351 अंक/आई.ए.एस./मध्य प्रदेश कैडर), आर्द्रा अग्रवाल (336 अंक/आई.ए.एस./गुजरात कैडर) और उदित प्रकाश (330 अंक/आई.ए.एस./यू.पी. कैडर) जैसे सफल उम्मीदवारों ने भी अंग्रेज़ी माध्यम के साथ हिंदी साहित्य रखते हुए स्वर्णिम सफलता हासिल की।

कुल मिलाकर, अगर आप बिना ज़्यादा गलतियाँ किये हिंदी भाषा में लिख लेते हैं और साहित्यिक रचनाओं के प्रति आपके मन में गहरी अरुचि नहीं है तो आप निडर होकर हिंदी साहित्य रख सकते हैं। इस बात की परवाह न करें कि आपकी पृष्ठभूमि किसी दूसरे विषय की है या आपका माध्यम अंग्रेज़ी है।

हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम *(Syllabus of Hindi Literature)*

प्रश्न-प्रत्र-I

खंड : 'क' (हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का इतिहास)

1. अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारंभिक हिन्दी का व्याकरणिक तथा अनुप्रयुक्त स्वरूप।
2. मध्यकाल में ब्रज और अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास।
3. सिद्ध एवं नाथ साहित्य, खुसरो, संत साहित्य, रहीम आदि कवियों और दक्खिनी हिन्दी में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप।
4. उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली और नागरी लिपि का विकास।
5. हिन्दी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण।
6. स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का विकास।
7. भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास।
8. हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास।
9. हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ और उनका परस्पर संबंध।
10. नागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ और उसके सुधार के प्रयास तथा मानक हिन्दी का स्वरूप।
11. मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना।

खंड : 'ख' (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

1. हिन्दी साहित्य की प्रासंगिकता और महत्त्व तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा।

2. हिन्दी साहित्य के इतिहास के निम्नलिखित चार कालों की साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

(क) **आदिकाल:** सिद्ध, नाथ और रासो साहित्य।
प्रमुख कवि: चंदबरदाई, खुसरो, हेमचन्द्र, विद्यापति।

आरती सिंह (IAS/2016)

मैंने वैकल्पिक विषय के रूप में हिंदी साहित्य चुना। इसके दो प्रमुख कारण थे- एक तो विषय का स्कोरिंग होना व दूसरा 'दृष्टि द विज़न' संस्थान में डॉ. विकास दिव्यकीर्ति सर का अच्छा मार्गदर्शन

(ख) **भक्ति कालः** संत काव्य धारा, सूफी काव्यधारा, कृष्ण भक्तिधारा और राम भक्तिधारा। प्रमुख कवि : कबीर, जायसी, सूर और तुलसी।

(ग) **रीतिकालः** रीतिकाव्य, रीतिबद्ध काव्य, रीतिमुक्त काव्य प्रमुख कवि : केशव, बिहारी, पद्माकर और घनानंद।

(घ) **आधुनिक कालः** (क) नवजागरण, गद्य का विकास, भारतेन्दु मंडल (ख) प्रमुख लेखक : भारतेन्दु, बाल कृष्ण भट्ट और प्रताप नारायण मिश्र।

(ङ) आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ। छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, नवगीत, समकालीन कविता और जनवादी कविता।

प्रमुख कवि : मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह 'दिनकर', सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', गजानन माधव मुक्तिबोध, नागार्जुन।

3. ***कथा साहित्यः***
   (क) उपन्यास और यथार्थवाद
   (ख) हिन्दी उपन्यासों का उद्भव और विकास
   (ग) प्रमुख उपन्यासकार : प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, यशपाल, रेणु और भीष्म साहनी।
   (घ) हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास।
   (ङ) प्रमुख कहानीकार : प्रेमचन्द, जयशंकर प्रसाद, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', मोहन राकेश और कृष्णा सोबती।

4. ***नाटक और रंगमंच :***
   (क) हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास
   (ख) प्रमुख नाटककार : भारतेन्दु, जयशंकर प्रसाद, जगदीश चंद्र माथुर, रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश।
   (ग) हिन्दी रंगमंच का विकास।

5. ***आलोचना :***
   (क) हिन्दी आलोचना का उद्भव और विकास- सैद्धांतिक, व्यावहारिक, प्रगतिवादी, मनोविश्लेषणवादी आलोचना और नई समीक्षा।
   (ख) प्रमुख आलोचक - रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा और नगेन्द्र।

6. ***हिन्दी गद्य की अन्य विधाएँः*** ललित निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त।

प्रश्न-प्रत्र-II

इस प्रश्नपत्र में निर्धारित मूल पाठ्य पुस्तकों को पढ़ना अपेक्षित होगा और ऐसे प्रश्न पूछे जाएंगे जिनसे अभ्यर्थी की आलोचनात्मक क्षमता की परीक्षा हो सके।

खंड : 'क' (पद्य साहित्य)

1. ***कबीर*** : कबीर ग्रंथावली (आरंभिक 100 पद) सं. श्याम सुन्दर दास
2. ***सूरदास*** : भ्रमरगीत सार (आरंभिक 100 पद) सं. रामचंद्र शुक्ल
3. ***तुलसीदास*** : रामचरित मानस (सुंदर काण्ड), कवितावली (उत्तर काण्ड)
4. ***जायसी*** : पद्मावत (सिंहलद्वीप खंड और नागमती वियोग खंड) सं. श्याम सुन्दर दास
5. ***बिहारी*** : बिहारी रत्नाकर (आरंभिक 100 दोहे) सं. जगन्नाथ दास रत्नाकर
6. ***मैथिलीशरण गुप्त*** : भारत भारती
7. ***जयशंकर प्रसाद*** : कामायनी (चिंता और श्रद्धा सर्ग)
8. ***सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'*** : राग-विराग (राम की शक्ति पूजा और कुकुरमुत्ता) सं. रामविलास शर्मा
9. **रामधारी सिंह 'दिनकर'**: कुरुक्षेत्र
10. **अज्ञेय** : आंगन के पार द्वार (असाध्यवीणा)
11. **मुक्ति बोध** : ब्रह्मराक्षस
12. **नागार्जुन** : बादल को घिरते देखा है, अकाल और उसके बाद, हरिजन गाथा।

खंड : 'ख' (गद्य साहित्य)

1. **भारतेन्दु** : भारत दुर्दशा
2. **मोहन राकेश** : आषाढ़ का एक दिन
3. **रामचंद्र शुक्ल** : चिंतामणि (भाग-1), (कविता क्या है, श्रद्धा-भक्ति)।
4. **निबंध निलय** : संपादक : डॉ. सत्येन्द्र। बाल कृष्ण भट्ट, प्रेमचन्द, गुलाब राय, हजारीप्रसाद द्विवेदी, रामविलास शर्मा, अज्ञेय, कुबेरनाथ राय।
5. **प्रेमचंद** : गोदान, 'प्रेमचंद' की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (संपादक : अमृत राय)
6. **प्रसाद** : स्कंदगुप्त
7. **यशपाल** : दिव्या
8. **फणीश्वरनाथ रेणु** : मैला आँचल
9. **मन्नू भण्डारी** : महाभोज
10. **राजेन्द्र यादव (सं.)** : एक दुनिया समानान्तर (सभी कहानियाँ)

पाठ्यक्रम का विश्लेषण *(Analysis of the Syllabus)*

सिविल सेवा परीक्षा में सभी विषयों के पाठ्यक्रम को दो प्रश्नपत्रों में विभाजित किया गया है। आमतौर पर पहले प्रश्नपत्र का संबंध सैद्धांतिक पक्षों से होता है जबकि दूसरे प्रश्नपत्र का व्यावहारिक पक्षों से। विषय में उम्मीदवार की समझ कितनी है, इसकी परीक्षा इस बात से भी की जा सकती है कि वह दोनों प्रश्नपत्रों के आपसी संबंधों को कितनी गहराई से समझता है। पिछले कुछ वर्षों में बहुत से विषयों में ऐसे प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति बढ़ी है जो दोनों प्रश्नपत्रों की तुलनात्मक समझ पर आधारित हैं। हिंदी साहित्य का पाठ्यक्रम भी इसी ढाँचे पर आधारित है।

प्रश्नपत्र-1 (Paper 1)

प्रश्नपत्र-1 के दो खंड हैं। पहले खंड का संबंध 'हिंदी भाषा के इतिहास' से है और दूसरे खंड का 'हिंदी साहित्य के इतिहास' से।

'हिंदी भाषा के इतिहास' में सबसे पहले यह पढ़ना होता है कि संस्कृत से हिंदी के विकास की प्रक्रिया में कौन-कौन सी अवस्थाएँ आईं और उनकी भाषिक विशेषताएँ क्या थीं? फिर, जब हिंदी का उद्भव हो गया तो तब से अब तक लोक-जीवन और साहित्य के क्षेत्रों में उसके विकास की क्या प्रवृत्तियाँ रहीं? इसके अलावा, इस खंड में यह भी पढ़ना

होता है कि हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा व सम्पर्कभाषा के तौर पर कितनी सफल है; वह वर्तमान वैज्ञानिक-तकनीकी युग की अपेक्षाओं पर किस हद तक खरा उतर पा रही है; और क्या देवनागरी लिपि इंटरनेट और अन्य सूचना-तकनीकों की उपस्थिति में अपनी प्रासंगिकता बचा पा रही है?

'हिंदी साहित्य के इतिहास' में यह पढ़ना होता है कि जबसे हिंदी भाषा का उद्भव हुआ, तबसे अभी तक उसमें रचे गए साहित्य की प्रकृति और विषयवस्तु क्या हैं; और वह अपने दौर की सामाजिक ज़िम्मेदारियों को ठीक से निभा पाया है या नहीं? इस खंड को मोटे तौर पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है- 'हिंदी कविता का इतिहास' तथा 'हिंदी गद्य का इतिहास'। हिंदी कविता का इतिहास लगभग 1000 ईस्वी से अभी तक फैला है जिसे चार युगों (आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल) में बाँटकर पढ़ा जाता है। दूसरी ओर, हिंदी गद्य का इतिहास सिर्फ आधुनिक काल से संबंधित है जिसमें उपन्यास, कहानी, नाटक-रंगमंच, समीक्षा जैसी विधाओं के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना अपेक्षित है।

प्रश्नपत्र-2 (Paper 2)

प्रश्नपत्र-2 में साहित्य के व्यावहारिक पक्ष शामिल हैं। इसमें कुछ साहित्यिक रचनाओं की सूची दी गई है। उम्मीदवार से अपेक्षा की जाती है कि वह उन्हें पढ़े और साहित्यिक दृष्टि से उनका मूल्यांकन करे। परीक्षा में उन रचनाओं की अंतर्वस्तु (अर्थात् विचार-पक्ष) तथा शिल्प (अर्थात् भाषा-शैली) से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

इस प्रश्नपत्र के भी दो खंड हैं। पहला खंड कविताओं से संबंधित है जबकि दूसरा खंड गद्य-विधाओं (जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक-रंगमंच तथा समीक्षा आदि) से। दोनों खंडों में पहला प्रश्न व्याख्याओं से संबंधित होता है जिसमें किसी रचना की कुछ पंक्तियाँ दी जाती हैं और उम्मीदवार को रचना का उल्लेख करते हुए उन पंक्तियों का अर्थ-स्पष्टीकरण तथा साहित्यिक मूल्यांकन करना होता है। शेष प्रश्न रचनाओं के किसी विशेष पक्ष (जैसे सामाजिक प्रासंगिकता, विचारधारा या भाषा-शैली) से संबंधित होते हैं।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिये प्रश्न-पत्र 2 के दोनों खंडों में शामिल कवियों अथवा विधाओं का वर्गीकरण इस पृष्ठ पर नीचे दिया गया है।

दोनों प्रश्नपत्रों का आपसी संबंध (Mutual Relationship between both papers)

प्रश्नपत्र 1 और 2 में गहरा आंतरिक संबंध है। प्रश्नपत्र-1 में हिंदी साहित्य का इतिहास है जबकि प्रश्नपत्र-2 में इस इतिहास के हर दौर के महान कवियों/गद्यकारों की रचनाओं का अध्ययन करना होता है। गहरी समझ के लिये बेहतर यही है कि दोनों प्रश्नपत्रों को अलग-अलग पढ़ने की बजाय साथ-साथ पढ़ा जाए।

उदाहरण के लिये, प्रश्नपत्र-1 में एक टॉपिक है- 'भक्तिकाल'। प्रश्नपत्र-2 में इसी भक्तिकाल से जुड़े चार कवि हैं- कबीर, जायसी, सूर और तुलसी। अगर कोई विद्यार्थी भक्तिकाल का इतिहास समझते हुए इन कवियों को उसके साथ पढ़ता है तो निस्संदेह उसकी समझ बेहतर बनती है क्योंकि वह उनकी कविताओं के लिये ज़िम्मेदार तात्कालिक परिस्थितियों को भी समझ पाता है। इसी तरह, प्रश्नपत्र-1 में गद्य-साहित्य के इतिहास के अंतर्गत एक टॉपिक है-'हिंदी उपन्यास का इतिहास'। दूसरी ओर, प्रश्नपत्र-2 में चार उपन्यास शामिल हैं- गोदान, मैला आँचल, दिव्या और महाभोज। इन उपन्यासों तथा उपन्यासकारों के संबंध में कई बार ऐसे प्रश्न पूछे जाते हैं कि इन्होंने हिंदी उपन्यास के विकास में क्या योगदान दिया है? ऐसे प्रश्न का परिपक्व उत्तर लिखने के लिये बेहतर होता है कि उपन्यास का इतिहास पढ़ते हुए उस उपन्यास को उसी बिंदु पर पढ़ा-समझा जाए जहाँ उसकी रचना की गई थी।

दोनों प्रश्नपत्रों में विद्यमान इस अंतर्संबंध के कारण 'दृष्टि' के कक्षा कार्यक्रम में इन्हें साथ-साथ ही पढ़ाया जाता है, क्रमिक रूप नहीं।

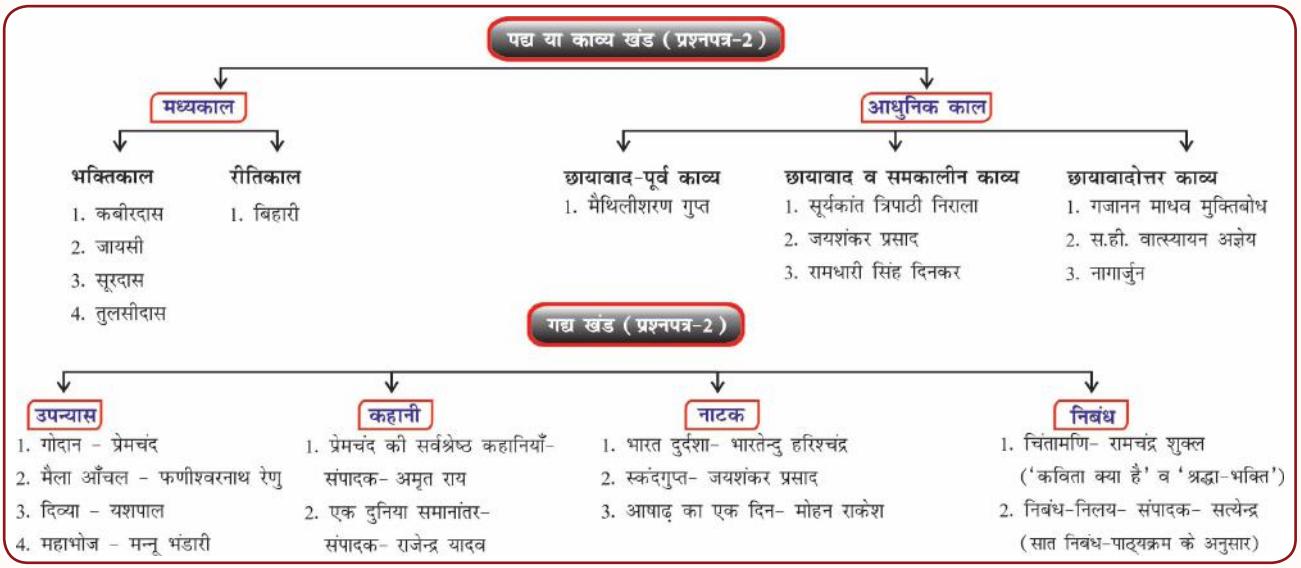

क्या चयनात्मक अध्ययन सम्भव है? (Is selective study possible?)

2010 से पहले तक सिविल सेवा परीक्षा के सभी विषयों में यह सुविधा थी कि उम्मीदवार चयनात्मक अध्ययन करके काम चला ले। ऐसे में, उपरोक्त दोनों प्रश्नपत्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण अध्याय पढ़कर ही कई उम्मीदवार सफल हो जाते थे। 2010 से सभी विषयों के प्रश्नपत्रों की प्रकृति बदलने लगी है और ये बदलाव हर वर्ष नए-नए रूपों में सामने आते रहे हैं। इन बदलावों का सार यह है कि अब लगभग प्रत्येक अध्याय से छोटा या बड़ा प्रश्न ज़रूर पूछा जाता है और चयन की सुविधा भी इस तरह से दी जाती है कि पूरा पाठ्यक्रम पढ़ने वाले उम्मीदवारों को बढ़त हासिल हो।

इन बदलावों के कारण अन्य वैकल्पिक विषयों की तरह हिंदी साहित्य में भी 'सिलेक्टिव' अध्ययन करने की सुविधा कम हो गई है। अगर आप सचमुच अच्छे रैंक के साथ इस परीक्षा में सफल होना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप पूरे पाठ्यक्रम को ठीक से ज़रूर देख लें। हाँ, आप यह कर सकते हैं कि कुछ महत्त्वपूर्ण अध्यायों को ज़्यादा गहराई

से तैयार करें और शेष को सिर्फ देख भर लें। वैसे भी, तीन महीने की अवधि में आप हिंदी साहित्य के पूरे पाठ्यक्रम को कायदे से तैयार कर सकते हैं।

हिंदी साहित्य का कक्षा कार्यक्रम *(Class Programme for Hindi Literature)*

'दृष्टि' हिंदी साहित्य के क्षेत्र में सर्वाधिक स्थापित संस्था है। पिछले 19 वर्षों से हिंदी साहित्य और दृष्टि को पर्यायवाची माना जाता है। कक्षा-कार्यक्रम ऑडियो-वीडियो व्याख्यान के रूप में चलता है। प्रत्येक व्याख्यान के उपरान्त इच्छुक विद्यार्थी अपने प्रश्नों और जिज्ञासाओं को उस समय उपलब्ध शिक्षक के सामने रखकर उनका समाधान प्राप्त कर सकता है। इसके लिये सिविल सेवा हेतु हिन्दी साहित्य की कोचिंग एवं विश्वविद्यालयी शिक्षा से संबद्ध कोई अध्यापक मौजूद रहेगा। हमारे कक्षा कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. अध्यापक (Faculty)

'दृष्टि' में हिन्दी साहित्य का अध्यापन डॉ. विकास करते हैं। ये स्वयं हिंदी साहित्य विषय के साथ सिविल सेवा परीक्षा में चयनित होकर भारत सरकार के गृह मंत्रालय में लगभग 1 वर्ष तक कार्य कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त, वे दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी साहित्य में पी.एच.डी. करने के उपरान्त वहीं 2 महाविद्यालयों में लगभग 1 वर्ष तक प्राध्यापक रहे हैं। वर्तमान में उक्त सभी सेवाओं से त्यागपत्र देकर 'दृष्टि' में 'अकादमिक निदेशक' के रूप में कार्यरत हैं। डॉ. विकास के अतिरिक्त विद्यार्थियों की हिन्दी साहित्य संबंधी समस्याओं एवं जिज्ञासाओं के समाधान हेतु सिविल सेवा कोचिंग एवं विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में लंबा अनुभव रखने वाले कुछ अन्य प्राध्यापक भी 'दृष्टि' से संबद्ध हैं।

2. अध्यापन प्रणाली (Teaching Methodology)

'दृष्टि' की एक विशेष अध्यापन-प्रणाली है जो इसे बाकी संस्थाओं से अलग करती है। यहाँ किसी भी टॉपिक को याद करने या रटने की सलाह नहीं दी जाती बल्कि कोशिश की जाती है कि हर विद्यार्थी मूल धारणाओं (Basic Concepts) को समझे तथा आत्मसात् करे।

कक्षा में हर टॉपिक पर विस्तृत व रोचक चर्चा होती है। हास्य-व्यंग्य, मनोरंजन और व्यावहारिक उदाहरणों का सहज प्रयोग करते हुए विद्यार्थियों को टॉपिक समझाए जाते हैं।

परीक्षा में पहले पूछे जा चुके तथा अन्य संभावित प्रश्नों को भी चर्चा में एक ज़रूरी संदर्भ की तरह शामिल किया जाता है। कठिन प्रश्नों के उत्तरों की रूपरेखा पर विशेष चर्चा होती है तथा विद्यार्थियों को स्वयं कठिन से कठिन प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है।

3. पाठ्य-सामग्री (Study Material)

हिंदी साहित्य में दृष्टि के पास विस्तृत पाठ्य-सामग्री है जो कक्षा में हर टॉपिक के अनुसार विद्यार्थियों को दी जाती है। कुछ नोट्स कक्षा में लिखवाए भी जाते हैं। इन दोनों को मिला लें तो प्रायः एक भी ऐसा प्रश्न नहीं बचता जिसके लिये विद्यार्थी को किसी पुस्तक या अन्य स्रोत का सहारा लेना पड़े।

4. नियमित प्रश्नोत्तर अभ्यास (Daily Question Answer Practice)

प्रतिदिन कक्षा के पहले उत्तर-लेखन अभ्यास हेतु तीन प्रश्न विद्यार्थियों को दिया जाता है। दिये गए प्रश्न का मॉडल उत्तर भी उसी दिन कक्षा के उपरांत विद्यार्थियों को उपलब्ध करा दिया जाता है। यह उत्तर-लेखन अभ्यास विद्यार्थियों में सटीक उत्तर-लेखन क्षमता के विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है।

5. जाँच-परीक्षाएँ तथा उत्तर-लेखन अभ्यास (Tests and Answer-writing Practice)

संस्था की कोशिश रहती है कि सत्र के दौरान हर महीने कम-से-कम 3 या 4 जाँच-परीक्षाएँ आयोजित होती रहें ताकि विद्यार्थियों को अपनी प्रगति का स्तर समझने और सुधारने के पर्याप्त अवसर मिल सकें। इसके अलावा, कोई भी विद्यार्थी अपने स्तर पर उत्तर-लेखन का अभ्यास कर सकता है जिसके मूल्यांकन की व्यवस्था संस्था करती है।

6. डिस्क्शन क्लास (डॉ. विकास द्वारा)

विद्यार्थियों के संशयों एवं प्रश्नों के समाधान हेतु कक्षा कार्यक्रम के दौरान सामान्यतः तीन बार स्वयं डॉ. विकास भी कक्षा में आते हैं जो विद्यार्थियों के लिये काफी लाभदायक होता है।

पिछले वर्षों की परीक्षाओं में विभिन्न टॉपिक्स से प्रश्न पूछे जाने की प्रवृत्ति

प्रश्नपत्र-I (Paper-I)

खंड 'क': हिंदी भाषा का इतिहास		2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018
1.	अपभ्रंश, अवहट्ट	—	प्र.	—	—	—	प्र.	टि.	प्र.	टि.	20	30	—	—	10	10, 20	—	10	15
2.	प्रारंभिक हिंदी	—	—	—	—	—	—	—	टि.	प्र.	—	—	—	—	—	15	—	—	—
3.	ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास	प्र./1/2	—	प्र./1/2	—	टि.	—	—	—	—	—	—	12/2	—	—	10	—	—	—
4.	अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास	प्र./1/2	—	प्र./1/2	—	—	टि.	प्र.	—	—	—	30	12/2	10	—	—	10	10	10

5.	सिद्ध, नाथ, खुसरो, संत साहित्य, रहीम आदि के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप	टि.	—	टि.	—	टि.	टि.	टि.	—	टि.	20	20	12	10, 15, 20	10, 10, 15	10	10, 10	10, 20	10
6.	दक्खिनी हिंदी	टि.	—	—	टि.	टि.	—	—	टि.	—	—	—	—	10	15	15	10	15	15
7.	उन्नीसवीं शताब्दी में खड़ी बोली व नागरी लिपि का विकास	—	—	प्र./1/2	—	—	टि.	प्र./टि.	—	—	20	—	—	10	—	—	10	10, 15	
8.	हिंदी भाषा और नागरी लिपि का मानकीकरण	—	—	प्र./1/2	—	—	—	—	—	प्र./1/2	20	20	30, 30	10	—	15	—	—	—
9.	नागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ एवं सुधार के प्रयास	—	टि.	—	प्र.	प्र.	प्र.	—	टि.	प्र./1/2	20	20	12, 20	—	10	10	—	10	10
10.	राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी का विकास	—	टि.	टि.	—	टि. (तु)	टि.	—	—	—	30	20	20, 20	20	15	15	15, 20	15	15, 15
11.	राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास	टि.	प्र.	टि.	टि.	टि. (तु)	—	—		—	—	—	12	—	20, 15	15	15	20	20
12.	हिंदी भाषा का वैज्ञानिक, तकनीकी विकास	प्र.	—	—	टि.	—	प्र.	प्र.	टि.	—	30	20, 20	12	15, 15	20	20	20, 15	20, 15	20, 20
13.	हिंदी की प्रमुख बोलियाँ	—	प्र./टि.	प्र./टि.	प्र.	प्र.	—	टि.	—	—	20, 60	30	12	15	15, 10	20	20	15	10, 15
14.	मानक हिन्दी की व्याकरणिक संरचना	प्र./टि.	टि.	टि.	टि.	—	—	—	प्र.	प्र./टि.	20	30	20, 20, 20	15, 20	20, 15	15	15, 15	—	10, 15
15.	अन्य	—	—	टि.	प्र.	प्र.	—	—	—	—	—	—	—	15	—	—	15	15	

प्रश्नपत्र-I (Paper-I)

खंड 'ख': हिंदी साहित्य का इतिहास		2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018
1.	हिंदी साहित्य की प्रासंगिकता और महत्त्व	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
2.	हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा	—	—	—	—	—	प्र.	—	—	—	20	20	12	—	—	—	—	—	—
3.	आदिकाल	—	2 प्र.	टि.	प्र.	प्र.	प्र.	2 टि.	प्र./टि.	टि.	—	—	12	10	—	20	10	—	10, 20
4.	भक्तिकाल	टि.	प्र./टि.	प्र./टि.	टि./ टि. (तु)	प्र./टि.	टि./टि.	प्र.	टि.	टि./प्र./ टि.(तु)	20, 60	20	30, 30	20, 15	15	10, 15	10, 10	10	10, 15
5.	रीतिकाल	प्र.	टि.	टि.	टि. (तु)	टि.	—	—	प्र./टि.	प्र.		30	12	10	10, 20	10, 15	10	10	10
6.	नवजागरण, गद्य का विकास	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
7.	भारतेन्दु युग	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	10	10	10	10	—
8.	द्विवेदी युग	—	—	—	—	—	—	टि.	—	—	15	—	—	—	—	—	10	—	15
9.	छायावाद	—	—	—	—	प्र.	—	—	टि.	टि (तु)	30	20	12	10	10	—	20	20	—
10.	प्रगतिवाद	प्र.	—	प्र.	—	—	—	—	—	—	15	30	—	—	—	15	—	—	—
11.	प्रयोगवाद	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	30	30	—	15	—	—	15	—
12.	नई कविता	प्र.	टि.	—	प्र.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

13.	नवगीत	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
14.	समकालीन कविता	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
15.	जनवादी कविता	टि.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
16.	उपन्यास	—	—	—	टि.	—	प्र./टि.	—	—	टि.	—	—	30	10, 20	10, 20, 15	10, 20	15	15, 15	15
17.	कहानी	टि.	—	प्र.	—	—	—	प्र.	—	—	20	30	—	15, 15	—	10	20	10	10
18.	नाटक और रंगमंच	—	—	—	प्र.	—	—	टि.	—	प्र.	20	—	12	15, 10	10, 15	10, 15	15	10, 15	10, 15, 15, 15
19.	आलोचना	टि.	टि.	—	टि.	टि.	टि.	प्र.	—	—	30, 30	30, 30	12, 30	25	20	15	20	20	20
20.	ललित निबंध	प्र.	—	—	—	टि.	—	—	प्र.	—	—	—	—	—	—	—	15	20	—
21.	रेखाचित्र	—	—	टि.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	15	—	15	—	20
22.	संस्मरण	—	—	टि.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	25	—	15	15	15	—
23.	यात्रा वृत्तांत	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	30	—	15	—	15	15	—

प्रश्नपत्र-II (Paper-II)

खंड 'क': काव्य (व्याख्या)		2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018
1.	कबीर ग्रंथावली	●		●			●		●	●	●			●					
2.	भ्रमरगीत सार	●				●	●		●		●				●	●	●	●	●
3.	रामचरितमानस, कवितावली			●	●			●		●		●	●		●	●	●	●	●
4.	पद्मावत		●			●						●	●						
5.	बिहारी रत्नाकार		●		●									●		●		●	●
6.	भारत भारती			●					●				●	●					
7.	कामायनी	●					●				●			●	●	●	●	●	●
8.	राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता				●	●		●	●	●		●					●		
9.	कुरुक्षेत्र		●			●	●							●	●		●		
10.	असाध्य वीणा	●		●				●			●				●	●			●
11.	ब्रह्मराक्षस				●			●					●					●	
12.	नागार्जुन		●							●			●						
खंड 'क': काव्य (प्रश्न)																			
1.	कबीर ग्रंथावली	—	प्र.	—	—	—	—	प्र.	—	—	—	30	30	25	20		20	20	20
2.	भ्रमरगीत सार	—	—	—	—	प्र.	—	—	—	—	—	30	30	25	20	20	20	15	15
3.	रामचरितमानस, कवितावली	प्र.	—	—	—	—	प्र.	—	प्र.	—	30	30/2	30/2	25	—	15		—	20
4.	पद्मावत	—	—	प्र.	प्र.	—	—	प्र.	—	प्र.	—	30/2	30/2	25	15	15	15	15	15
5.	बिहारी रत्नाकार	—	—	—	—	—	—	—	प्र.	प्र.	30	30	30	—	15	15	15	—	—
6.	भारत भारती	—	—	—	प्र.	—	—	—	—	—	30	—	30	—	15	15	15	20	—
7.	कामायनी	—	प्र.	—	प्र.	प्र.	—	प्र.	—	—	—	30	—	—	15	—		—	15
8.	राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता	प्र.(तु)	—	प्र.	—	प्र.	प्र.	—	—	—	30	—	—	25	20	20		15	15
9.	कुरुक्षेत्र	—	—	—	—	—	—	—	—	—	30	—	—	—	15	15	15	20	20

10.	असाध्य वीणा	—	प्र.	—	—	—	—	—	—	—	—	30	—	25	—	—	20	15	15
11.	ब्रह्मराक्षस	—	—	प्र.	—	—	प्र.	—	—	प्र.	30	—	30	—	—	20	15	15	15
12.	नागार्जुन	प्र.	—	—	—	—	—	—	प्र.	—	—	—	—	—	15	15	15	15	

प्रश्नपत्र-II (Paper-II)

खंड 'ख': गद्य (व्याख्या)		2001	2002	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015	2016	2017	2018
1.	भारत दुर्दशा	●									●			●			●	●	●
2.	स्कंदगुप्त		●		●			●	●			●		●	●	●	●		●
3.	आषाढ़ का एक दिन			●			●			●	●	●			●	●	●		●
4.	गोदान		●		●	●		●		●	●				●	●	●		●
5.	मैला आँचल					●									●			●	
6.	दिव्या	●				●	●	●	●				●●			●	●	●	
7.	महाभोज		●		●				●	●									
8.	चिंतामणि	●	●	●	●	●	●	●	●	●		●	●	●	●	●		●	●
9.	निबंध निलय	●		●										●					
10.	सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ																		
11.	एक दुनिया समानान्तर			●			●				●		●●	●				●	
खंड 'क': गद्य (प्रश्न)																			
1.	भारत दुर्दशा	—		—	प्र.	—	—	—	प्र.	प्र.	—	30	—	—	—	20	15	20	15
2.	स्कंदगुप्त	—	—	प्र.	—		प्र.	—	—	—	30, 30/2	—	—	—	20	20	15	15	20
3.	आषाढ़ का एक दिन	प्र.	—	—	—	—	—	प्र.	—	—	30/2	—	30	25	—	—	15	—	—
4.	गोदान	प्र.	प्र.(तु)	प्र.(तु)	प्र./½	प्र.	प्र./½	—	प्र.	प्र.	—	30	30		20	—	15	20	20
5.	मैला आँचल	प्र.	प्र.(तु)	प्र.(तु)	—	—	प्र.	प्र.	—	—	—	30	30	25	15	15	20	15	15, 15
6.	दिव्या	—	प्र.		प्र.	—	—	—	—	—	30	—	30	—	—	20	—	—	15
7.	महाभोज	—	—	—	—	—	—	—	—	—	30		—	25	15	15	15	15	15
8.	चिंतामणि		—	—	—	प्र.	—	—	—	—	30, 30	—	—	25	—	—	20	20	20
9.	निबंध निलय	—	प्र.	—	—	प्र.	—	प्र.	—	—	—	30, 30	30, 30	25	20, 15, 15	15	15	—	—
10.	प्रेमचंद	—	—	प्र.	प्र./½	—	प्र./½	—	—	—	—	—	—	25	15	15	—	15	—
11.	एक दुनिया समानान्तर	—	—		—	प्र.		—	प्र.	प्र.		30	—	—	15	1 5 , 15	20	15, 15	15
12.	तुलनात्मक प्रश्न	—	प्र.	प्र.	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—		—	—

कक्षाओं से पहले क्या पढ़ें?
(What to read before the classes?)

अगर आप 'दृष्टि' में हिंदी साहित्य के सत्र में शामिल होने वाले हैं तो पाठ्य-सामग्री के संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं के अनुसार रणनीति बनाएँ-

1. दरअसल, इन कक्षाओं के लिये किसी भी पृष्ठभूमि की आवश्यकता नहीं है। चूँकि, हिंदी साहित्य के सत्र में अधिकांश विद्यार्थी विज्ञान, इंजीनियरिंग, वाणिज्य, मेडिकल या साहित्येतर विषयों की पृष्ठभूमि से होते हैं, इसलिये हम यह मानकर चलते हैं कि सभी विद्यार्थी सत्र के आरंभ के समय हिंदी साहित्य में शून्य स्तर पर हैं। कक्षा में उसी स्तर से पढ़ाना शुरू किया जाता है। हर खंड में 2-3 दिन विषय की पृष्ठभूमि स्पष्ट करने में ही खर्च किये जाते हैं।

इसलिये, अगर आप सत्र शुरू होने से पहले हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम में कुछ भी नहीं पढ़ सके हैं तो निश्चिंत रहें। ऐसी स्थिति में भी आप 90-100 दिनों में पूरे पाठ्यक्रम को आत्मसात् कर लेंगे।

2. अगर आपके पास सत्र आरंभ होने से पूर्व पर्याप्त समय है और आप पाठ्यक्रम का कुछ हिस्सा पहले से पढ़कर आना चाहते हैं तो प्रश्नपत्र-2 के गद्य खंड की कुछ ऐसी रचनाओं को पढ़ सकते हैं जिन्हें आपको वैसे भी सत्र के दौरान पढ़ना होगा। इन रचनाओं का क्रम निम्नलिखित हो सकता है-

   1. गोदान (प्रेमचंद का उपन्यास), 2. महाभोज (मन्नू भंडारी का उपन्यास), 3. प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ (संपादक- अमृत राय), 4. आषाढ़ का एक दिन (मोहन राकेश का नाटक), 5. एक दुनिया समानांतर (राजेन्द्र यादव द्वारा संपादित कहानी संकलन) की कुछ कहानियाँ, जैसे- यही सच है, खोई हुई दिशाएँ, मछलियाँ, टूटना, चीफ की दावत, भोलाराम का जीव इत्यादि; 6. दिव्या (यशपाल का उपन्यास), 7. मैला आँचल (फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास)।

3. हालाँकि इस बात की आवश्यकता नहीं है, पर अगर आपकी इच्छा इन रचनाओं के अलावा साहित्य की कुछ अवधारणाओं को जानने की हो तो आप एन.सी.ई.आर.टी. की 11वीं कक्षा की पुस्तक 'साहित्यशास्त्र परिचय' (लेखक श्री राधावल्लभ त्रिपाठी) पढ़ सकते हैं।

4. इसके बाद, यदि आप और पढ़ना चाहें तो कक्षा 12 की पुरानी पुस्तक 'हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' (लेखक डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी) भी पढ़ सकते हैं। अब यह पुस्तक दूसरे प्रकाशन से 'हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास' नाम से प्रकाशित है।

वस्तुतः उपरोक्त पुस्तकों में से एक को भी पढ़े बिना आप सत्र की शुरुआत कर सकते हैं। अगर आपने इन्हें न पढ़ा हो तो ज़रा भी तनाव न लें।

संदर्भ-ग्रंथ/पुस्तक सूची
(Reference Books/Books' List)

हिंदी साहित्य के लिये प्रत्येक उम्मीदवार को कुछ पाठ्य पुस्तकें पढ़नी होती हैं जिनका उल्लेख प्रश्न-पत्र 2 में किया गया है। जहाँ तक इन पुस्तकों से पूछे जाने वाले प्रश्नों का सवाल है, उनके उत्तर पुस्तक पढ़े बिना भी (कक्षा में होने वाली विस्तृत चर्चाओं के आधार पर) लिखे जा सकते हैं। व्याख्या वाले प्रश्नों के लिये उम्मीदवार को मूल पुस्तकें पढ़ लेनी चाहियें।

चूँकि, सभी पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने में बहुत सारा समय खर्च हो सकता है, इसलिये बेहतर यह है कि गद्य की कुछ आसान व मनोरंजक रचनाएँ पढ़ ली जाएँ और काव्य खंड में संक्षिप्त रचनाओं को पढ़कर तथा दीर्घ रचनाओं के केवल महत्त्वपूर्ण छंदों का अर्थ समझकर बाकी रचनाओं को छोड़ दिया जाए। इस प्रयोजन के लिये दृष्टि ने व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण प्रसंगों की सूची तैयार कर रखी है जिसे पढ़कर उम्मीदवार आसानी से काम चला सकते हैं।

'दृष्टि' के कक्षा कार्यक्रम में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों को वस्तुतः इसके अलावा एक भी पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। कक्षाओं में होने वाली चर्चाओं तथा पाठ्य-सामग्री के आधार पर वे आसानी से सभी प्रश्नों के उत्तर लिख सकते हैं। फिर भी, यदि कोई विद्यार्थी चाहे तो मूल अवधारणाएँ समझने के लिये कक्षा XI की N.C.E.R.T. पुस्तक 'साहित्यशास्त्र परिचय' पढ़ सकता है।

जो विद्यार्थी दृष्टि के कक्षा कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हैं, उनके लिये सर्वश्रेष्ठ विकल्प यह है कि दृष्टि के पत्राचार पाठ्यक्रम के तहत दी जाने वाली पाठ्य-सामग्री को आधार बनाएँ। इसके अतिरिक्त, वे निम्नलिखित पुस्तकों को संदर्भ-ग्रंथ की तरह प्रयुक्त कर सकते हैं-

हिन्दी भाषा का इतिहास

1. हिन्दी भाषा की परंपरा और विकास– डॉ. रामप्रकाश
2. हिन्दी भाषा– डॉ. हरदेव बाहरी

हिन्दी साहित्य का इतिहास

1. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास– डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
2. I.G.N.O.U. के नोट्स (एम.ए. पाठ्यक्रम)
3. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास- डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी
4. हिंदी साहित्य का इतिहास– संपादक-डॉ. नगेन्द्र

पद्य साहित्य

1. कबीर– हजारीप्रसाद द्विवेदी
2. भ्रमरगीतसार (भूमिका)- आ. रामचंद्र शुक्ल
3. जायसी ग्रंथावली (भूमिका)– आ. रामचंद्र शुक्ल
4. जायसी– विजयदेव नारायण साही
5. तुलसी– (सं.) उदयभानु सिंह
6. लोकवादी तुलसी- डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी
7. कामायनी: मूल्यांकन एवं पुनर्मूल्यांकन– (सं) इन्द्रनाथ मदान
8. कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ- डॉ. नगेन्द्र
9. निराला और मुक्तिबोध: चार लम्बी कविताएँ– नन्द किशोर नवल
10. निराला: एक आत्महंता आस्था– दूधनाथ सिंह
11. मुक्तिबोध– (संपादक) विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
12. कविता के नए प्रतिमान- डॉ. नामवर सिंह
13. असाध्यवीणा और अज्ञेय– (सं.) रमेश चंद्र शाह
14. कविता का परिसर– रामेश्वर राय

गद्य साहित्य

1. गोदान का महत्त्व– डॉ. सत्यप्रकाश मिश्र
2. मैला आँचल– गोपाल राय
3. स्कंदगुप्त– डॉ. सिद्धनाथ कुमार
4. भारत दुर्दशा: कथ्य और शिल्प– डॉ. रेवती रमण
5. आधुनिक नाटक का मसीहा: मोहन राकेश– गोविंद चातक
6. चिंतामणि विमर्श– डॉ. रामकृपाल पांडेय
7. एक दुनिया समानांतर की भूमिका- राजेन्द्र यादव

टॉपर्स क्या कहते हैं....

अभिषेक सिंह (IAS) मध्य प्रदेश कैडर (48वाँ स्थान, 2008)

"विकास सर ने मेरी तैयारी की शुरुआत से ही मेरा सहयोग किया। मैंने दर्शनशास्त्र छोड़कर हिंदी साहित्य का चयन किया। मैंने 'दृष्टि' में हिन्दी साहित्य के साथ-साथ निबंध तथा साक्षात्कार की कक्षाएँ भी कीं। विकास सर की अध्यापन प्रणाली वैज्ञानिक होने के साथ-साथ सरल एवं सुबोध भी है। हिन्दी जैसे विषय में यह पद्धति उसे और भी आसान बना देती है। सर से हिन्दी की कक्षाएँ कर लेने से मुझे उसे समझने और लिखने में सहजता महसूस हुई।"

आशीष सिंह (IAS/ 60वाँ रैंक, 2009-10)

"लोक प्रशासन में अपने पूर्व प्रदर्शन को लेकर मैं बहुत निराश था। विकास सर ने न केवल मुझे हिन्दी साहित्य विषय लेने के लिये प्रेरित किया बल्कि मात्र चार महीनों में ही विषय की समझ को इस प्रकार से विकसित कर दिया कि उनकी बदौलत मैं यह सफलता अर्जित कर सका। मुझे निराशा के दौर से बाहर निकालकर सफलता का सुखद अनुभव प्राप्त कराने में सर के योगदान के लिये मैं सदैव उनका आभारी रहूंगा।"

कृष्णा वाजपेयी (IAS, बिहार कैडर) (64वाँ रैंक-2010)

"मैं अपनी सफलता का श्रेय विकास सर के मार्गदर्शन को देता हूँ। साहित्य में रुचि तो प्रारंभ से ही थी परंतु आई.आई.टी. की इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि के बाद इस परीक्षा में एक विषय के रूप में साहित्य का चुनाव करना एक कठिन व चुनौतीपूर्ण निर्णय था परंतु सर की प्रेरणा, सतत् मार्गदर्शन और अथक रूप से अपने विद्यार्थियों के साथ लगे रहने का जुनून ही अंतिम रूप से सफलता की ओर ले जा सका। मैं एक बार फिर विकास सर को धन्यवाद देता हूँ जिनके कारण न केवल हिन्दी साहित्य विषय लेकर सफलता मिली अपितु साहित्य की गहन समझ भी विकसित हुई।"

कौशलेन्द्र विक्रम सिंह (IAS, मध्य प्रदेश कैडर) (33वाँ रैंक, 2009)

"हिन्दी साहित्य के लिये मैं पूर्णत: 'दृष्टि' पर आश्रित रहा। विकास सर ने न केवल संपूर्ण पाठ्यक्रम को सरल व प्रभावी तरीके से समझाने में मदद की बल्कि लगातार प्रश्नों की प्रभावी रूपरेखा भी बनवाई। इससे परीक्षा भवन में मैं प्रश्नों को तय समय सीमा में प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर सका। मेरे पिछली बार के चयन (IRS) में हिन्दी साहित्य का विशेष योगदान (362 अंक) था और इस बार भी ऐसी ही उम्मीद करता हूँ। इन्टरव्यू के लिये भी मुझे सर के साथ मिलकर परिपक्व दृष्टिकोण निर्माण में विशेष मदद मिली।

तपन कुमार (IRS) (प्रथम प्रयास में सफल-2007)

"मैंने दूसरे विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का चयन प्रारंभिक परीक्षा देने के बाद किया और 'दृष्टि' संस्थान में प्रवेश लिया। मुझे इतना समय भी नहीं मिला कि मैं नाटक, उपन्यास या कविता की मूल रचनाएँ पढ़ सकूँ। सिर्फ कक्षा में हुई चर्चाओं के आधार पर मैंने मुख्य परीक्षा दी और सफल हो गया। सुखद आश्चर्य है कि मेरी सफलता में सबसे अधिक योगदान हिन्दी साहित्य का ही रहा।"

शिल्पा गर्ग (IAS, पश्चिम बंगाल कैडर) (55वाँ स्थान, 2007)

"प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम आने तक भी मैंने अपना दूसरा विषय नहीं चुना था। प्रारंभिक परीक्षा का परिणाम आने के पश्चात् मैंने 'दृष्टि' में 'हिन्दी साहित्य' की कक्षाओं को ज्वाइन किया। यहाँ पर डॉ. विकास के मार्गदर्शन में मैंने लगभग दो माह में ही सारा पाठ्यक्रम इस तरह गहनतापूर्वक समझ लिया कि मुख्य परीक्षा के पहले ही प्रयास में मुझे सफलता मिल गई। मैं 'दृष्टि' संस्था व विकास सर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।"

ललित शाक्यवार (IPS, मध्य प्रदेश कैडर/2007)

"दृष्टि के विकास सर का मैं हृदय से आभारी हूँ। उन्हीं के मार्गदर्शन के कारण मुझे हिन्दी साहित्य में 357 अंक मिले, जिन्होंने मेरी सफलता में निर्धारक भूमिका निभाई। हिन्दी साहित्य के लिये मैं पूर्णत: 'दृष्टि' की कक्षाओं पर निर्भर रहा, मुझे किसी भी अन्य सामग्री या सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ी।"

धनंजय सिंह भदौरिया (IAS, म.प्र. कैडर) (51वाँ स्थान, 2005)

"मैं विकास सर से समय-समय पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन लेता रहा। उन्होंने न केवल कठिन विषयों पर मुझे नोट्स उपलब्ध कराए, बल्कि उत्तर लेखन शैली के विकास में भी मेरी पर्याप्त मदद की। प्रश्न का तार्किक विखंडन करके उसके विश्लेषण की विभिन्न दिशाओं को उत्तर में समेटने की शैली मैंने विकास सर से ही सीखी जो मेरे लिये अत्यंत उपयोगी रही।"

मनोज शर्मा (IPS, महाराष्ट्र कैडर/2004)

"मैंने दूसरे विषय के रूप में हिन्दी साहित्य का चयन किया; किंतु मेरे पास उसकी कोई पृष्ठभूमि नहीं थी। मैं भाग्यशाली रहा कि मुझे हिंदी साहित्य के लिये 'दृष्टि' के विकास सर का मार्गदर्शन मिला जो मेरे लिये अग्रज तुल्य हैं। दूसरे विषय और सामान्य अध्ययन में मैंने स्व-अध्ययन पर काफी बल दिया किंतु हिंदी साहित्य में तो मुझे उनकी कक्षाओं के नोट्स के अलावा कुछ भी पढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ी।"

अवनीश कुमार शरण (IAS, छत्तीसगढ़ कैडर) (77वाँ स्थान, 2008)

"मैंने 'दृष्टि' में हिंदी साहित्य की कक्षाएँ कीं। डॉ. विकास सर की सरल तथा सुबोध शैली से मेरी समझ तथा उत्तर-लेखन शैली में गुणात्मक सुधार हुआ। इस वर्ष दूसरे प्रयास में मेरी 77वीं रैंक आई, जिसमें निश्चय ही हिन्दी साहित्य का प्रमुख योगदान (357 अंक) है। सर की कक्षाओं का लाभ मुझे न केवल हिन्दी साहित्य तथा निबंध में मिला, बल्कि सामाजिक विषयों के प्रति दृष्टिकोण व्यापक हुआ; जिसका लाभ मुझे परीक्षा के हर चरण में मिला।"

धर्मेन्द्र सिंह (IPS, उत्तर प्रदेश कैडर)

"मेरी इस सफलता के प्रासाद में सबसे मज़बूत स्तम्भ 'दृष्टि' के आदरणीय विकास सर हैं। मैं हिंदी साहित्य की विषयवस्तु तथा प्रकृति को लेकर संशय में था किंतु इस विषय को उन्होंने जिस वैज्ञानिक दृष्टिकोण से पढ़ाया, उसी कारण हिंदी साहित्य में मेरी धारणाएँ स्पष्ट हो सकीं। हिन्दी साहित्य के अतिरिक्त, उनके सुलझे दृष्टिकोण से मुझे निबंध और साक्षात्कार में ही नहीं, बल्कि परीक्षा के हर कदम पर लाभ मिला। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं कि विकास सर से मैंने व्यक्तित्व और चरित्र के स्तर पर जितना सीखा है, उतना कहीं से नहीं।"

नीतू कुमारी प्रसाद (हिंदी साहित्य में 364 अंक) (IAS, आंध्र प्रदेश कैडर) (35वाँ रैंक, 2000)

"हिन्दी साहित्य का पाठ्यक्रम इस बार परिवर्तित हो गया था जिस कारण मैं चिंतित थी। इसलिये मैंने दिल्ली स्थित संस्थान 'दृष्टि' में दाखिला लिया। वहाँ के अध्यापक डॉ. विकास ने हिन्दी की तैयारी बहुत कम समय में बहुत अच्छे तरीके से कराई। मुझे आशा है कि मुझे हिन्दी साहित्य में बहुत अच्छे अंक प्राप्त हुए होंगे। 'दृष्टि' में मैंने निबंध की कक्षाएँ भी कीं और पाया कि सामान्यत: प्रचलित विषयों पर भी चिंतन के कितने विस्तृत और सूक्ष्म आयाम हो सकते हैं।"

नितिन प्रमोद (IFS)

"हिन्दी साहित्य में मैंने यद्यपि परास्नातक किया है तथापि विषय की गहरी समझ और सिविल सेवा के अनुरूप तैयारी और उत्तर-लेखन की कला, 'दृष्टि द विज़न' के विकास सर के सहयोग से ही विकसित हुई। मेरी इस सफलता में 'हिन्दी साहित्य' और उसके पर्याय विकास सर का महत्त्वपूर्ण योगदान है।"

निशान्त जैन (हिंदी साहित्य में 313/500 अंक) (IAS/13वाँ रैंक, 2014)

मैंने हिन्दी साहित्य की तैयारी हेतु विकास सर के मार्गदर्शन में चलने वाले दृष्टि द विज़न के कक्षा-पाठ्यक्रम में नामांकन लिया। मेरी सफलता में विकास सर की महती भूमिका है। हिन्दी साहित्य को अपनी जीवन्त व्याख्यान-शैली के साथ जिस गहराई एवं विस्तार के साथ उन्होंने आत्मसात् कराया, वह अप्रतिम है। मेरी इस उच्च सफलता में दृष्टि द विज़न के हिन्दी साहित्य कक्षा-पाठ्यक्रम की आधारभूत भूमिका रही।

मनीष कुमार वर्मा (IPS-CSE/2014)

वैकल्पिक विषय के चयन के समस्त पैमानों पर निस्संदेह हिन्दी साहित्य सर्वोत्कृष्ट ठहरता है। इसके पाठ्यक्रम का लघु आकार तथा सुग्राह्य एवं अंकदायी होना तो महत्त्वपूर्ण है ही, लेकिन साथ ही इसका पद्य खंड हमारे निबंध लेखन में सहायक पंक्तियों का भंडार भी समृद्ध करता है और निबंध में भी पर्याप्त मदद करता है। विषय के रूप में इसका महत्त्व अतुलनीय मार्गदर्शन की उपस्थिति के कारण भी बढ़ जाता है। विकास सर की सरल, सहज और सारगर्भित शिक्षण-प्रणाली इस विषय को सर्वश्रेष्ठ अंकदायी विकल्प बना देती है। मेरी सफलता में हिन्दी साहित्य में प्राप्त उत्कृष्ट अंकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मैं इसके लिये विकास सर के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

प्रदीप कुमार (IRS/2014)

हिन्दी साहित्य एक रोचक व अंकदायी विषय है। संक्षिप्त पाठ्यक्रम के साथ-साथ इसकी खास बात यह है कि आपको बार-बार इसे अद्यतन (Update) नहीं करना पड़ता। सबसे मज़ेदार यह बात है कि आपको अपनी सामान्य बोलचाल की हिन्दी ही प्रयोग करनी होती है न कि तत्समी, जिसके कारण यह सभी (हिन्दी और अंग्रेज़ी माध्यम) के लिये सुलभ विषय है। इस विषय की सहज व हृदयानुकूल प्रकृति बोरियत महसूस नहीं होने देती। अंतिम व सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात यह कि इसके पाठ्यक्रम हेतु दर-ब-दर भटकना नहीं पड़ता। दृष्टि संस्थान द्वारा उपलब्ध पाठ्यक्रम परीक्षा की दृष्टि से सर्वाधिक अनुकूल है।

CHAT NOW

दृष्टि The Vision

1800-121-6260 011-47532596 Login Register

एन.सी.ई.आर.टी. टेस्ट | कक्षा कार्यक्रम | डिस्टेंस लर्निंग प्रोग्राम
टेस्ट सीरीज़ | करेंट अफेयर्स | दृष्टि मीडिया

तैयारी का वह हिस्सा जो किताबों से पूरा नहीं हो सकता, उसके लिये हम आपको आमंत्रित करते हैं

अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com/hindi

तैयारी की रणनीति	मेंस प्रैक्टिस प्रश्न	पी.सी.एस. परीक्षा की तैयारी
डेली न्यूज़ और एडिटोरियल (अंग्रेज़ी के प्रमुख समाचार पत्रों से)	राज्यसभा/लोकसभा टी.वी. डिबेट	पी.आर.एस. कैप्सूल्स
माइंड मैप	60 Steps to Prelims	टू द पॉइंट
फोरम	एन.सी.ई.आर.टी. टेस्ट	महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट्स की जिस्ट
डेली करेंट टेस्ट (योजना, कुरुक्षेत्र सहित अन्य महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं के टेस्ट)	ब्लॉग	यू-ट्यूब चैनल

रोज़ाना एक घंटा इस वेबसाइट पर गुज़ारिये और प्रिलिम्स से इंटरव्यू तक की अपनी तैयारी को मज़बूत आधार प्रदान कीजिये।

For any query please contact:
87501 87501, 011-47532596

दृष्टि The Vision

करैंट अफेयर्स टुडे

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी को समर्पित मासिक पत्रिका

पत्रिका की प्रमुख विशेषताएँ

- संपूर्ण समसामयिक घटनाक्रम
- विशेषज्ञों की रणनीतिक सलाह
- टॉपर से बातचीत
- संपूर्ण योजना, कुरुक्षेत्र (अंग्रेज़ी तथा हिंदी) समेत महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं का सार
- मुख्य परीक्षा हेतु समसामयिक मुद्दों पर संभावित प्रश्नोत्तर
- महत्त्वपूर्ण समसामयिक मुद्दों पर आलेख
- महत्त्वपूर्ण संगठन/संस्थाएँ
- निबंध लेखन का अभ्यास
- प्रारंभिक परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न
- साक्षात्कार की तैयारी से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा
- माइंड मैप एवं मानचित्रों से सीखें

और भी बहुत कुछ ...

हिंदी माध्यम के IAS/PCS टॉपर्स क्या कहते हैं 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' पत्रिका के बारे में...

मैं 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' पत्रिका का नियमित पाठक रहा हूँ। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के लिये यह पत्रिका बहुत उपयोगी साबित हो रही है। इस पत्रिका का आलेख खंड बेहद सराहनीय है। निबंध के लिये उद्धरण भी मैंने इसी पत्रिका से तैयार किये थे। मुख्य परीक्षा के लिये संभावित प्रश्नोत्तर अभ्यर्थियों के लिये बेहद उपयोगी हैं क्योंकि मुख्य परीक्षा में बहुत से प्रश्न सीधे वहीं से मिल जाते हैं।

गंगा सिंह, IAS टॉपर (रैंक-33)

मैं नियमित रूप से इस पत्रिका की पाठक रही हूँ। इसके हिंदी व अंग्रेज़ी दोनों वर्ज़न, दोनों माध्यमों के विद्यार्थियों के लिये काफी लाभप्रद रहे हैं। अंग्रेज़ी माध्यम में तो मैटर कई संस्थाओं द्वारा उपलब्ध कराए जा रहे थे, परंतु हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की हमेशा से अच्छा मैटर उपलब्ध न हो पाने की शिकायत रहती थी। दृष्टि करेंट अफेयर्स मैगज़ीन ने इस गैप को भर दिया है।

आरती सिंह, IAS टॉपर (रैंक-118)

'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' स्वयं में एक अनूठी और बहुआयामी पत्रिका है। इसका सभी विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध होना प्रतियोगिता जगत की एक बड़ी ज़रूरत पूरी करता है। मैंने खुद इस पत्रिका का लाभ उठाया है।

सिविल सेवा परीक्षा पर ही पूरी तरह केन्द्रित यह पत्रिका कई मायनों में विशिष्ट है। इंटरव्यू खंड, निबंध खंड, एथिक्स आदि पर विशेष ध्यान देना इस पत्रिका को बाकी पत्रिकाओं से अलग बनाता है। समसामयिक घटनाओं का सिविल सेवा परीक्षा के नज़रिये से विश्लेषण और फिर उनकी बिन्दुवार प्रस्तुति बेहद उपयोगी और प्रासंगिक है।

'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' आपकी सफलता में सार्थक भूमिका निभाएगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

निशांत जैन, IAS- राजस्थान कैडर

हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या यह है कि पत्रिका कौन सी पढ़ी जाए? इसके लिये सबसे अच्छा, श्रेष्ठ, प्रामाणिक और सारगर्भित स्रोत 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' के माध्यम से मिलता है। इंटीग्रेटेड एप्रोच से तैयारी के लिये हिंदी माध्यम में ऐसी किसी पत्रिका का अभाव था जो प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा और साक्षात्कार की ज़रूरतों को पूरा कर सके। विकास सर के मार्गदर्शन में यह पत्रिका निश्चित ही इन सभी मानकों पर खरी उतरती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थी गूगल ट्रांसलेटेड मैटीरियल पढ़ने की बजाय यह पत्रिका पढ़ें जो पूर्णत: मौलिक व अनुभवी टीम की मेहनत का परिणाम है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका उनके लिये निश्चित रूप से वरदान साबित होगी। शुभकामनाएँ।

राजेन्द्र पैंसिया, IAS- उ.प्र. कैडर

यह पत्रिका (दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे) हिन्दी माध्यम में उपलब्ध पाठ्यसामग्री की कमी को पूरा करने की एक गंभीर कोशिश है। इसके सभी खंडों का व्यवस्थित अध्ययन तैयारी को संपूर्णता प्रदान करता है। पत्रिका के 'समसामयिक मुद्दों पर संभावित प्रश्नोत्तर' खंड से मुझे मुख्य परीक्षा की तैयारी में विशेष मदद मिली थी।

मनीष कुमार, (IPS)

'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' एक मानक पत्रिका है। पिछले दो अंकों में तो इसने 'गागर में सागर' भर दिया है। वस्तुत: बाज़ार में उपलब्ध स्तरहीन सामग्री ने अभ्यर्थियों को दिशा-भ्रमित ही किया है। ऐसे में 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' ने विद्यार्थियों की राह आसान कर दी है।

प्रदीप कुमार, (IRS)

'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' एक सारगर्भित एवं विविध आयामी पत्रिका है जो सिविल सेवा परीक्षा के तीनों चरणों- प्रिलिम्स, मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार के लिये आवश्यक पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराती है। हिंदी माध्यम के अभ्यर्थियों के लिये सबसे बड़ी चुनौती समसामयिक मुद्दों पर प्रामाणिक कंटेंट की उपलब्धता की थी परंतु 'दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे' ने इस चुनौती को स्वीकारते हुए उत्कृष्ट एवं प्रामाणिक अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई है, जो सिविल सेवा अभ्यर्थियों के लिये वरदान साबित हो रही है। समसामयिक मुद्दों पर 'प्रश्नोत्तर खण्ड' तो मुख्य परीक्षा की तैयारी हेतु विशेष रूप से उपयोगी है। विकास सर का सम्पादकीय लेख अभ्यर्थियों को निरंतर प्रोत्साहित करता रहता है।

अंकित तिवारी, (IRS IT)

विद्यार्थियों के समक्ष उच्च स्तर की पाठ्य सामग्री का सदैव अभाव रहा है जिस कारण हिंदीभाषी छात्र हीन भावना के शिकार हो जाते हैं। यह पत्रिका (दृष्टि करेंट अफेयर्स टुडे) इस मानक पर खरी उतरती है कि इसमें परीक्षा के अनुरूप बहुआयामी समसामयिक खंडों को विश्लेषित करने तथा रोचक ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता है। खास तौर पर निबंध, एथिक्स और इंटरव्यू के लिये किया गया प्रयास इसे अन्य पत्रिकाओं से बेहतर बनाता है जो अवश्य ही विद्यार्थियों की सफलता में निर्णायक सिद्ध होगा। मैं दृष्टि परिवार की अनुकरणीय पहल का आभार व्यक्त करता हूँ।

जय प्रकाश, (IRTS)

राज्य व संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं की दृष्टि से यह पत्रिका मुझे बहुत उपयोगी लगी। यह पत्रिका समसामयिक घटनाचक्र के विषयों में आपकी समझ बढ़ाने के साथ ही, उस विषय पर बहुआयामी दृष्टिकोण का सृजन करती है। इस पत्रिका का निबंध व मॉक इंटरव्यू खण्ड तमाम डाउट्स को क्लियर करने में सहायक है।

विवेक यादव, (UPPCS, I-Rank)

मुख्य व प्रारंभिक परीक्षा के दृष्टिकोण से यह पत्रिका मुझे बहुत उपयोगी लगी। पत्रिका के लेख, निबंध व एथिक्स खण्ड परीक्षार्थियों के लिये निश्चित रूप से बहुत लाभदायक सिद्ध होंगे।

आदित्य प्रजापति, (UPPCS, II-Rank)

Drishti IAS

1.5+ Million subscribers

/DrishtiVideos /DrishtiMediaVideos /DrishtiIAS

Interview Guidance by Dr. Vikas Divyakirti

This series deals with a different set of questions in each episode that can be asked to any Civil Services aspirant in her interview.

Current News

This programme, anchored by Mr. Amrit Upadhyay, includes all the important news events of the previous week which is relevant solely from a Civil Service perspective.

Mock Interview

This series offers the opportunity for Civil Service aspirants to imagine themselves in an interview setting and going through the same questions helping them in the process to gauge the level of their preparation for the actual Personality Test.

To The Point (Short Notes)

"To The Point" is a program where exam-oriented material that is brief, succinct and to the point is provided to Civil Services aspirants.

Audio Article

The information provided in this series helps a Civil Services aspirant get a better understanding of select topics without the need for any coaching.

Today's G.K.

This program offers analysis and discussion of questions sourced from everyday news that may be asked in the UPSC exam in the form of a statement or otherwise factually in any other competitive exams.

YouTube/Drishti IAS

Scan the QR Code

Think IAS

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Quick Book शृंखला की पुस्तकें

अन्य परीक्षोपयोगी पुस्तकें

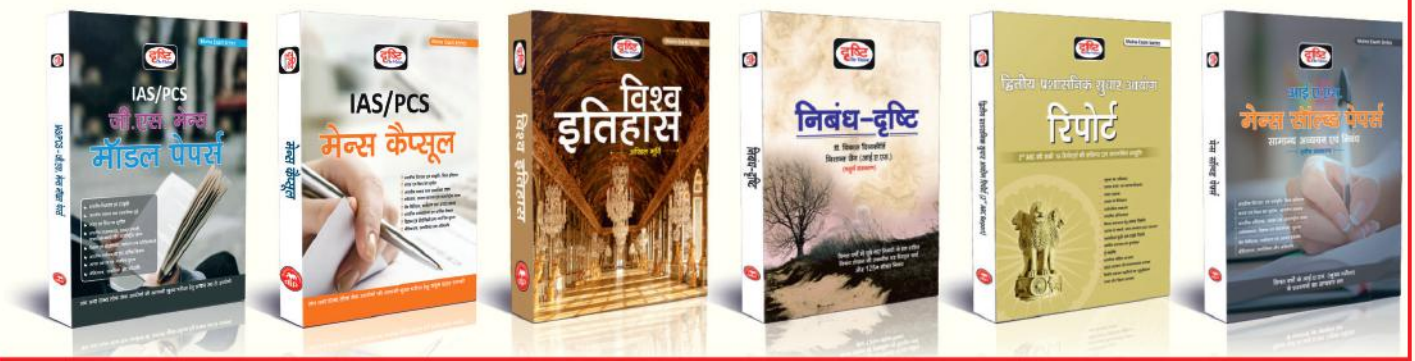

विस्तृत जानकारी क लिये कॉल करें 8448485516, 87501-87501, 011-47532596

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

641, Ist Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9 Ph.: 87501 87501, 011-47532596

E-mail: online@groupdrishti.com, *Website: www.drishtiias.com

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम
(Distance Learning Programme)

इस कार्यक्रम के अंतर्गत आप घर बैठे 'दृष्टि' द्वारा तैयार परीक्षोपयोगी पाठ्य-सामग्री मंगवा सकते हैं। यह पाठ्य-सामग्री विशेष रूप से ऐसे अभ्यर्थियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है जो दिल्ली आकर कक्षाएँ करने में असमर्थ हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सिविल सेवा और राज्य सेवा (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, उत्तराखंड पी.सी.एस.) परीक्षाओं की पाठ्य-सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। यह पाठ्य-सामग्री प्रत्येक परीक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुरूप है और इसे विभिन्न समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं एवं समितियों की रिपोर्टों के माध्यम से अद्यतन (up-to-date) किया गया है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा के लिये (हिंदी माध्यम में)

सामान्य अध्ययन
(प्रारंभिक परीक्षा)
(19 बुकलेट्स) ₹10,000/-

सामान्य अध्ययन
(मुख्य परीक्षा)
(26 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रारंभिक परीक्षा)
(27 बुकलेट्स) ₹13,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(31 बुकलेट्स) ₹15,000/-

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(39 बुकलेट्स) ₹17,500/-

हिन्दी साहित्य
(वैकल्पिक विषय)
(13 बुकलेट्स) ₹7,000/-

इतिहास
(वैकल्पिक विषय)
(12 बुकलेट्स) ₹7,000/-

दर्शनशास्त्र
(वैकल्पिक विषय)
(4 बुकलेट्स) ₹5,000/-

उत्तर प्रदेश पी.सी.एस. (UPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(33 + 10 Booklets) ₹15,500/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(33 Booklets) ₹14,000/-

राजस्थान पी.सी.एस. (RAS/RTS) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(34 बुकलेट्स) ₹10,500/-

बिहार पी.सी.एस. (BPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(25 बुकलेट्स) ₹10,000/-

मध्य प्रदेश पी.सी.एस. (MPPCS) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 Booklets) ₹11,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 Booklets) ₹10,000/-

उत्तराखंड पी.सी.एस. (UKPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 + 8 Booklets) ₹11,000/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(28 Booklets) ₹10,000/-

छत्तीसगढ़ पी.सी.एस. (CGPSC) के लिये

सामान्य अध्ययन + सीसैट
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(35 + 6 Booklets) ₹15,500/-

सामान्य अध्ययन
(प्रा.+ मुख्य परीक्षा)
(35 Booklets) ₹14,000/-

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें 8448485520, 87501-87501, 011-47532596

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

दृष्टि The Vision

किरण कौशल
3rd Rank

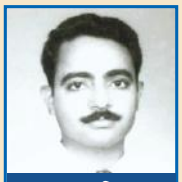
अजय मिश्रा
5th Rank

लोकेश कुमार सिंह
10th Rank

प्रदीप राजपुरोहित
13th Rank

निशांत जैन
13th Rank

गंगा सिंह
33rd Rank

प्रदीप कु. द्विवेदी
74th Rank

हिन्दी माध्यम में अब तक का सर्वश्रेष्ठ रैंक

रवि कु. सिहाग | अदित्य कु. झा | हरी शंकर | दिलखुश मीना | जगदीश बांगरवा | जगदीश कुमार | राहुल कु. सिंह | शीतल कुमारी | कमलेश मीना | भारत मनोज फतेसिंह | मिंटू लाल मीना | सचिन कुमार

सुनील कुमार | देवेंद्र प्रकाश मीना | ब्रज मोहन मीना | अनुप मीना | चेतराम मीना | सिद्धार्थ कु. मीना | विवेक कु. दोसाद | ज्योति शर्मा | अनिरुद्ध कुमार | अरविंद प्रताप सिंह | दिनेश कुमार यादव | अजय कुमार यादव

साक्षी गर्ग | राजीव कुमार चौधरी | बबीता रानी स्वैन | आदित्य कुमार झा | सोनल | प्रदीप कुमार द्विवेदी | आशुतोष शुक्ला | लाखन सिंह यादव | विकास मीणा | अनिल कुमार यादव | विजय सिंह गुर्जर | विकास सुंडा

मुकेश कुमार लुनायत | चेतन कुमार मीणा | हेमेंद्र कुमार मीणा | अक्षय कुमार टेमरवाल | कांता जांगिड | बिक्रम गंगवार | अशोक कुमार | अनिल कुमार वर्मा | रतन दीप गुप्ता | पंकज कुमार मीणा | पवन कुमार यादव | निलेश कुमार केशरी

आशीष कुमार | मनोज कुमार रावत | हिमांशु यादव | संदीप कुमार मीणा | भूपेंद्र रावत | शिव सिंह मीना | कमलेश मीना | गौरव कुमार सिंह | कृष्णकांत पाठक | बंदना प्रेयशी | श्वेता सिंघल | श्रीमन शुक्ला

तरुण राठी | सूफिया फारुकी | राज कमल यादव | नीलिमा | उदित प्रकाश | किंजल सिंह | शचीन्द्र प्रताप सिंह | कौशलेन्द्र विक्रम सिंह | मुक्तानंद अग्रवाल | बलदेव पुरुषार्थ | नीतू कुमारी प्रसाद | नथमल डिडेल

मुकेश कुमार | ब्रह्मदेव तिवारी | दयानिधान पांडेय | मनीष कुमार | राजेश प्रधान | आर्द्रा अग्रवाल | रमेश वर्मा | अश्विनी मुदगल | नरेंद्र मीणा | मिथिलेश मिश्रा | गोविंद जयसवाल | अभिषेक सिंह

राहुल रंजन महिवाल | धनंजय सिंह धदौरिया | गिरवर दयाल सिंह | काना राम | शिल्पा गर्ग | दीपक आनंद | रूबल गुप्ता | आशीष सिंह | संगीता तेतरवाल | डॉ. विक्रांत पांडेय | कृष्णा वाजपेयी | सीमा त्रिपाठी

अजीत वसंत | वैभव श्रीवास्तव | अवनीश कुमार शरण | अशोक मीणा | नितीश कुमार | अनूप कुमार सिंह | मनोज कुमार | प्रदीप कुमार | रानू साहू | अमित कुमार | गौरव गांधी | नीलम रानी

विवेक अग्रवाल | दीपि अग्रवाल | अजय कुमार | मनिता मलिक | ब्रजेश संत | अभिषेक सिंह | पुष्पेंद्र कुमार | प्रतिभा पारिक | श्रद्धा जोशी | दीपक वर्णवाल | सुधांशुधर मिश्र | मोहित अग्रवाल